दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण

(भारत का नं. 1 महापत्तन)

25वाँ अंक
जनवरी - जून 2023

लहरों का राजहंस

दिनांक 29 जुलाई, 2023 को नई दिल्ली में आयोजित मंत्रालय की हिंदी सलाहकार समिति की बैठक के दौरान माननीय पत्तन, पोत-परिवहन एवं जलमार्ग मंत्री, श्री सर्वानंद सोनोवाल जी के करकमलों से शील्ड एवं प्रमाणपत्र ग्रहण करते हुए दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण के अध्यक्ष, श्री एस.के. मेहता जी।

ज्ञानार्थ प्रवेश एवं सेवार्थ प्रस्थान के उद्देश्य को सिद्ध करने हेतु दि. 3 अप्रेल 2023 को माननीय विधायिका-गांधीधाम, श्रीमती मालतीबेन महेश्वरी एवं श्री एस.के. मेहता, आईऐफएस, अध्यक्ष, डीपीए द्वारा डीपीए केन्द्रीय विद्यालय का उद्घाटन किया गया।

अध्यक्ष महोदय का संदेश

श्री संजय कुमार मेहता
भा.व.से.
अध्यक्ष, दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण

प्रिय साथियों,

यह अत्यंत प्रसन्नता की बात है कि दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण की हिंदी गृह पत्रिका 'लहरों का राजहंस' का नियमित रूप से प्रकाशन किया जा रहा है एवं राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार को लगातार बढ़ावा दिया जा रहा है। उसी क्रम में 'लहरों का राजहंस' के पच्चीसवें अंक के माध्यम से पुनः आप सभी से संवाद स्थापित करते हुए अत्यंत हर्ष एवं आनंद की अनुभूति हो रही है। दीनदयाल पत्तन राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में भारत सरकार द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने हेतु सदैव प्रयासरत रहता है और आप सभी के प्रयासों के फलस्वरूप दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण में राजभाषा हिंदी का कार्यान्वयन लक्ष्यानुरूप बना हुआ है। इस उपलब्धि के लिए दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण के सभी अधिकारी एवं कर्मचारी सराहना के पात्र हैं। इसके अलावा दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण, कंडला/गांधीधाम की नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नराकास) की अध्यक्षता के दायित्व को भी श्रेयस्कर ढंग से निभा रहा है और नगर में स्थित केन्द्र सरकार के कार्यालय नराकास की गतिविधियों में अपना योगदान देकर इसके गठन के उद्देश्य को पूरा करने में अपना सहयोग दे रहे हैं।

दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण ने संदर्भाधीन अवधि के दौरान अपने सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों के संगठित एवं समर्पित प्रयासों से कई उपलब्धियाँ तथा पुरस्कार एवं सम्मान हासिल किए गए हैं। दीनदयाल पत्तन पिछले 16 वर्षों से भारत के प्रमुख पत्तनों में प्रथम स्थान पर बना हुआ है। नौभार प्रहस्तन के मामले में वित्तीय वर्ष 2022-23 के दौरान दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण ने निर्धारित लक्ष्य को पार करते हुए 137.56 मिलियन मीट्रिक टन नौभार प्रहस्तन का नया कीर्तिमान स्थापित कर दिया है। यह भी अत्यंत हर्ष का विषय है कि राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में राजभाषा हिंदी में उत्कृष्ट कार्य हेतु पत्तन, पोत परिवहन एवं जलमार्ग मंत्रालय की शील्ड योजना के तहत दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण को 'ख' क्षेत्र के लिए वर्ष 2013-14, 2014-15 और 2015-16 के लिए द्वितीय पुरस्कार एवं वर्ष 2018-19 के लिए प्रथम पुरस्कार प्रदान किया गया। मुझे आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि पत्तन के अधिकारियों, कर्मचारियों और प्रयोक्ताओं सहित सभी के संगठित प्रयासों से हम न केवल इस वर्ष भी बहु उपलब्धियों को बनाये रख पाने में सक्षम होंगे बल्कि इसे और अधिक ऊँचे स्तर तक ले जा पाएंगे और देश की आर्थिक प्रगति में अपने संगठन की ओर से बहुमूल्य योगदान भी कर पाएंगे।

मुझे यह कहते हुए गर्व का अनुभव होता है कि दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण अपने सामाजिक और राष्ट्रीय दायित्वों का बखूबी निर्वहन कर रहा है। दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण के प्रयासों को हर पटल पर सराहा गया है। इसके लिए मैं आप सभी को बधाई देता हूं। दीनदयाल पत्तन के अनवरत विकास और उत्कृष्टता को बनाए रखने का संकल्प आप सभी की सक्रिय भागीदारी से ही संभव है। यह आवश्यक है कि हम सभी एक जुट होकर दीनदयाल पत्तन की समृद्धि, प्रगति और निरंतर विकास में सक्रिय रूप से सहभागी बनें। अंत में, हिंदी गृह पत्रिका के प्रकाशन से जुड़े सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों के सफल प्रयासों की मैं सराहना करता हूं और बधाई देता हूं, साथ ही आशा करता हूं कि पत्रिका अपने प्रकाशन से उद्देश्य में सफल सिद्ध होगी।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित, जय हिन्द।

उपाध्यक्ष महोदय का संदेश

श्री नंदीश शुक्ल
आई.आर.टी.एस.
उपाध्यक्ष, दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण

प्रिय साथियो,

देश की एकता और अखंडता को बनाए रखने में राष्ट्रभाषा हिंदी का अहम योगदान है। सच्चे अर्थों में यदि कहें तो हिंदी हमारी संस्कृति, आदर्श, संस्कारों और हमारे जीवन मूल्यों की सच्ची परिचायक और संवाहक भी है। हिंदी हमारी राजभाषा है अतः राजभाषा हिंदी का प्रयोग करना हमारा संवैधानिक दायित्व है। दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण भारत सरकार की राजभाषा नीति के अनुपालन में हमेशा अग्रणी बने रहने का प्रयास करता रहा है, पत्रिका का प्रकाशन इस प्रयास का एक अभिन्न अंग है। हर्ष का विषय है कि दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण की छमाही गृह पत्रिका 'लहरों का राजहंस' का पच्चीसवां अंक प्रकाशित हो रहा है। हिन्दी गृह पत्रिका के माध्यम से पत्तन में कार्यरत अधिकारियों एवं कर्मचारियों को अपनी रचनाधर्मिता लोगों के समक्ष प्रस्तुत करने का मंच प्राप्त होता है, साथ ही अपना मौलिक साहित्य सृजित करने की प्रेरणा भी मिलती है।

दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों के सहयोग से ही पत्तन में राजभााषा नीति का शत-प्रतिशत सफल कार्यान्वयन संभव है। इस कार्य में पत्तन के अधिकारी और कर्मचारी पहले से ही अपना योगदान करते आ रहे हैं । कंडला/गांधीधाम क्षेत्र की नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की अध्यक्षता के दायित्व का निर्वहन भी दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण द्वारा सफलतापूर्वक किया जा रहा है। मुझे आशा ही नहीं, वरन पूर्ण विश्वास है कि पत्तन के कामकाज में राजभाषा हिंदी का प्रयोग बढ़ाने के लिए अपने संवैधानिक उत्तरदायित्व को समझते हुए सभी अधिकारी और कर्मचारी अपना योगदान आगे भी बढ़-चढ़ कर देते रहेंगे। इस पत्रिका के माध्यम से पत्तन के अधिकारी, कर्मचारी और उनके परिजन अपनी मौलिक सृजन क्षमता को सबके साथ साझा कर सकते हैं और एक-दूसरे के विचारों को जान-समझ सकते हैं।

मैं, पत्तन के सभी अधिकारियों और कर्मचारियों से अपील करूंगा कि अपने दैनिक कार्यालयीन कामकाज में राजभाषा हिंदी का अधिक से अधिक प्रयोग करते हुए एवं तत्संबंधी सभी नियमों का अनुपालन सुनिश्चित करते हुए संघ सरकार की राजभाषा नीति के अनुपालन में किये जा रहे दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण के प्रयासों को मजबूती प्रदान करें ताकि हमारे प्रयासों को मान्यता प्राप्त हो सके और आने वाले वर्षों में भी दीनदयाल पोर्ट को पुनः मंत्रालय एवं राष्ट्रीय स्तर पर राजभाषा पुरस्कार प्राप्त हो सके। मैं, अपनी रचनाधर्मिता का उदाहरण पेश करने वाले एवं प्रकाशन से जुड़े सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों का अभिनंदन करते हुए आप सभी को बधाई एवं हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करता हूं।

जय हिंद।

सचिव महोदय का संदेश

श्री सी. हरिचंद्रन
सचिव
दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण

प्रिय साथियों,

दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण की छमाही हिन्दी गृह पत्रिका 'लहरों का राजहंस' के पच्चीसवें अंक के माध्यम से पुनः आप सभी से संवाद स्थापित करते हुए अत्यंत हर्ष एवं आनंद की अनुभूति हो रही है। दीनदयाल पत्तन राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में भारत सरकार द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने हेतु सदैव प्रयासरत रहता है और आप सभी के प्रयासों के फलस्वरूप दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण में राजभाषा हिंदी का कार्यान्वयन लक्ष्यानुरूप बना हुआ है। इस उपलब्धि के लिए दीनदयाल पत्तन पाधिकरण के सभी अधिकारी एवं कर्मचारी सराहना के पात्र हैं। इसके अलावा दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण, कंडला/गांधीधाम की नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नराकास) की अध्यक्षता के दायित्व को भी श्रेयस्कर ढंग से निभा रहा है और नगर में स्थित केन्द्र सरकार के कार्यालय नराकास की गतिविधियों में अपना योगदान देकर इसके गठन के उद्देश्य को पूरा करने में अपना सहयोग दे रहे हैं।

राजभाषा हिंदी में सरकारी कामकाज को बढ़ावा देने के लिए सरकार की नीति प्रेरणा और प्रोत्साहन की रही है, जिसका अक्षरशः अनुपालन दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण में भी हो रहा है। दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण में सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए कई प्रोत्साहन योजनायें लागू हैं। इसके अलावा हिंदी दिवस/पखवाड़ा का आयोजन, नियमित हिंदी प्रशिक्षण कार्यशालाओं के आयोजन के साथ-साथ लेखन आदि के क्षेत्र में रुचि रखने वाले दीनदयाल पत्तन के अधिकारियों, कर्मचारियों एवं उनके परिजनों के लिए अपनी सृजनात्मक क्षमता का सार्वजनिक स्तर पर प्रदर्शन कर पाने में सहायता हेतु हिंदी के प्रचार-प्रसार को बढ़ावा देना है। दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण कंडला / गांधीधाम क्षेत्र की नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की अध्यक्षता के दायित्व का भी बखूबी निर्वहन कर रहा है।

दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण राजभाषा विभाग द्वारा निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त कर रहा है तथापि इस क्षेत्र में सतत प्रयास जारी रखने की आवश्यकता है ताकि दीनदयाल पत्तन राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में शीर्षतम बिंदु को भी स्पर्श कर सके। मुझे पूर्ण विश्वास है कि यदि दीनदयाल पत्तन के सभी अधिकारी एवं कर्मचारी अपने सक्रिय एवं समर्पित प्रयास करेंगे तो यह अवश्य संभव हो सकेगा। मैं आप सभी से अनुरोध करता हूँ कि अपने दैनिक कार्यालयीन कामकाज में अधिक से अधिक राजभाषा नीति के अनुपालन में किये जा रहे दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण के प्रयासों को मजबूती प्रदान करें ताकि हमारे प्रयासों को मूल्यांकन के सभी स्तरों पर मान्यता और सम्मान प्राप्त होता रहे। इस अंक में अपनी रचनाधर्मिता का उदाहरण पेश करने वाले एवं प्रकाशन से जुड़े सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों का अभिनंदन करते हुए आप सभी को पुनश्च बधाई एवं हार्दिक शुभकामनाएँ।

जय हिन्द ।

लहरों का राजहंस

25वाँ अंक
जनवरी 2023 - जून 2023

संरक्षक
श्री संजय कुमार मेहता - भा.व.से.
अध्यक्ष

उप–संरक्षक
श्री नंदीश शुक्ल - आई.आर.टी.एस.
उपाध्यक्ष

मार्गदर्शक
श्री सी. हरिचंद्रन - सचिव
श्री प्रदीप महान्ति - उप संरक्षक
श्री बी. भाग्यनाथ - वि.स. एवं मु.ले.अ.
श्री जी.आर.वी. प्रसाद राव - यातायात प्रबंधक
डॉ. अनिल चेलानी - मुख्य चिकित्सा अधिकारी
श्री वी. रवीन्द्र रेड्डी - मुख्य अभियंता
श्री ए. रामास्वामी - मुख्य प्रचालन प्रबंधक
श्री सुशीलचंद्र नाहक - मुख्य यांत्रिक अभियंता

संपादक
श्री शैलेन्द्र कुमार पाण्डेय - वरिष्ठ सहायक सचिव

उप–संपादक
डॉ. महेश बापट - वरि. उप मुख्य चिकित्सा अधिकारी
श्री ओम प्रकाश दादलानी - जनसंपर्क अधिकारी
श्री राजेश रोत - उप सामग्री प्रबंधक

सहायक संपादक मंडल
श्रीमती संगीता खिलवानी - वरि. हिन्दी अनुवादक
सुश्री इशरावती यादव - हिन्दी अनुवादक
श्री हरीश बचवानी - वरिष्ठ लिपिक

‘संपादकीय’

शैलेन्द्र कुमार पाण्डेय
वरिष्ठ सहायक सचिव एवं
हिंदी अधिकारी (प्रभारी) एवं
संपादक, लहरों का राजहंस

दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण की हिंदी गृह पत्रिका ‘लहरों का राजहंस’ का पच्चीसवां अंक आपके सम्मुख प्रस्तुत करते हुए अत्यंत हर्ष की अनुभूति हो रही है। हिंदी गृह पत्रिका ‘लहरों का राजहंस’ के माध्यम से दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण में सेवारत अधिकारियों, कर्मचारियों एवं अनेक परिजनों की रचनात्मकता एवं उनके विचारों का प्रवाह आप सबके सामने प्रस्तुत किया जाता है। साथ ही पत्रिका का प्रकाशन दीनदयाल पत्तन में संघ की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन के तहत हिंदी के प्रचार-प्रसार को बढ़ावा देने के लिए उठाया जाने वाला एक महत्वपूर्ण कदम भी है।

दीनदयाल पत्तन, राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में निर्धारित लक्ष्यों के अनुरूप प्रदर्शन कर रहा है तथापि बेहतरी की संभावनाएं बनी हुई है। अधिकारियों एवं कर्मचारियों को प्रेरित और प्रोत्साहित करने के लिए कई प्रोत्साहन योजनायें लागू हैं, जिनमें पर्याप्त संख्या में सहभागिता की जा रही है। दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण के सभी अधिकीरयों एवं कर्मचारियों के सहयोग से ही पत्तन में राजभाषा नीति का शत-प्रतिशत सफल कार्यान्वयन संभव है। मंत्रालय द्वारा दीनदयाल पत्तन को लगातार चार वर्षों के लिए राजभाषा शील्ड से सम्मानित किया। इसका साक्षात प्रमाण है। आशा ही नही वरन पूर्ण विश्वास है कि राजभाषा हिंदी का प्रचार-प्रसार करने में पत्तन की सांवैधानिक जिम्मेदारी के निर्वहन में पत्तन के सभी अधिकारियों और कर्मचारियों का योगदान आगे भी बढ–चढ़ कर मिलता रहेगा। इस पत्रिका के माध्यम के पत्तन के अधिकारी, कर्मचारी और उनके परिजन अपने मौलिक सृजन क्षमता को साझा कर सकते हैं और एक दूसरे के विचारों को जान-समझ सकते है।

सरकारी/सरकार नियंत्रित कार्यालयों में राजभाषा नीति के कार्यान्वयन को सुनिश्चित करने की जिम्मेदारी अधिकारियों के स्तर के लेकर कर्मचारियों के स्तर तक होना अपेक्षित है। अतः सभी अधिकारियों से विनम्र अनुरोध है कि राजभाषा कार्यान्वयन की प्रगति पर निगरानी रखना एवं अधीनस्थ सहकर्मियों को अपने दैनिक कार्यालयीन कामकाज में हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने के लिए प्रेरित, प्रोत्साहित करना एवं उत्तरदायी बनाना भी अत्यावश्यक है। दीनदयाल पत्तन में कार्यरत प्रत्येक अधिकारी और कर्मचारी से विनम्र अनुरोध एवं आग्रह है कि अन्य क्षेत्रों की तरह ही राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में भी अपना सर्वोत्तम योगदान एवं सक्रिय सहभागिता सुनिश्चित करते रहे ताकि संगठित एवं एकजुट प्रयास से प्रबंधतंत्र की अपेक्षानुरूप राजभाषा कार्यान्वयन के शीर्षस्थ बिंदु को आगे भी स्पर्श किया जा सके।

सतत सहयोग हेतु प्रबंधतंत्र के प्रति, साथ ही साथ सुविज्ञ एवं सुधी पाठकों के प्रति तथा अपनी रचनाएँ देने वाले अधिकारियों, कर्मचारियों एवं उनके परिजनों के प्रति हृदय तल से आभार प्रकट करते हुए तथा अगले अंक में आपसे पुनः मिलने के आश्वासन के साथ आप सभी को शुभकामनाएं देता हूँ।

हिन्दी के अलावा देश में परस्पर संपर्क भाषा बनाने का कोई विकल्प नहीं, अंग्रेजी कभी भी जनभाषा नहीं बन सकती - मोरारजी देसाई।

अनुक्रमणिका

			पृष्ठ सं.
1	MOVING ON... आगे बढ़ जाना	श्री दिलीप के. शहाणी	1
2	भीष्म पितामह की मृत्यु का रहस्य	श्रीमती हेमलता बी. पावागढ़ी	2
3	अयोध्या में राम	श्री करसन ए. धुआ	3
4	कम्प्यूटर	श्रीमती डॉली दवे	3
5	सावन की रिमझिम बूंदे	श्री जयेश शामजी देवरिया	4
6	दिल के खाली हाथ भी	श्रीमती हेमलता बी. पावागढ़ी	4
7	आयुर्वेद	श्रीमती लता दवे	5
8	नारी शक्ति	श्रीमती किरण जी. उधानी	5
9	जीवन की अनमोल बातें, मौत जिंदगी के तीन चीजों पर विशेष ध्यान देना चाहिए	श्रीमती सोनिया जे. हेमनानी	6
10	इतिहास	श्रीमती ज्योति एन. भावनानी	7
11	वात्सल्य	श्री कैलाश टी. सासिया	8
12	शिक्षा - हथियार भी, ढाल भी	श्री निकुंज सासिया	9
13	विशाल चुनौतियां विशालतम अवसर	श्रीमती लता दवे	10
14	जिंदगी की राह	श्रीमती किरण जी. उधानी	10
15	टिपटिपवा	श्रीमती पल्लवी सिंह	11
16	किसान की दुर्दशा पर	श्रीमती हेमलता बी. पावागढ़ी	12
17	सेब का पेड़	श्री मनजी एम. मकवाणा	13
18	जिंदगी - एक अहसास	श्रीमती अंजु बी. आहुजा	14
19	जीवन में खेल का महत्व	श्री यश दवे	14
20	मेरे गुरुवर	श्री चिराग निहालानी	15
21	ऐ जिंदगी तुझे समझ न पाया मैं	श्री जयेश शामजी देवरिया	16
22	प्रकृति का संदेश	श्रीमती राजुबेन करसन धुआ	17
23	वसंत पंचमी - 2024	श्री विनोद सी. दवे	17
24	टाइमपास	श्री प्रदीप पाण्डेय	18
25	कार्यक्रम की झलकियाँ	-	19
26	गाते रहिए	सुश्री ईला वेदान्त	23
27	खुशी से जियो	श्री के. नेताजी	24
28	विविधता और एकता हमारे देश की पहचान	श्री प्रतीक नरेश भावनानी	25
29	सेब का पेड़	श्री मनजी एम. मकवाणा	26
30	प्रदूषण	श्री भावेश बचवानी	27
31	लोकतंत्र	श्रीमती ज्योति एन. भावनानी	30
32	मेरे सपनों का भारत	श्री निखिल बचवानी	31
33	रण का उत्सव	श्रीमती आरती निहलानी	32
34	आत्मनिर्भर भारत में भारतीय भाषाओं का महत्व	कु. हनी खिलवानी	33

MOVING ON.... आगे बढ़ जाना

श्री दिलीप के. शहाणी
लेखा अधिकारी
वित्त विभाग

कोई दोस्त, कोई साथी, कोई हमसफर जब बिछड़ जाता है, कोई अपना जब खो खाता है, कोई सम्बन्ध/कोई सिलसिला जब टूट जाता है तब लोग कहते है मूव ओन (MOVE ON)। कितना आसान है कह देना MOVE ON लेकिन कितना मुश्किल है वास्तव में आगे बढ़ जाना, भुला देना अपने उस साथी को, अपने उस दोस्त को, जिसे अपना समझा था, जिससे रोज़ ढेरों बातें की थी, सुख-दुःख साझा किया था, सफलता के पल साझा किए थे।

यादगार स्मृतियों को, साथ बिताये सुनहरे पलों को, साथ साथ चुनौतियों का सामना कर उनसे जीत हांसिल करने के पलों को कोई कैसे भुला सकता है?

आगे बढ़ जाना तब बेहद कठिन हो जाता है जब साथ न रहने के बाद भी, सिलसिला खत्म हो जाने के बाद भी अपने बिछड़े साथी से, अपने बिछड़े दोस्त से रोज आमना सामना होता हो। सच में कितना मुश्किल होता है अजनबी बन जाना उनके सामने जिन्हें कभी बहुत करीब था माना।

काश हमारी स्मृतियाँ कम्प्यूटर के हार्ड डिस्क जैसी होती, फॉर्मेट (FORMAT) कमांड चलाते ही एक क्षण में सब स्मृतियाँ हंमेशा के लिए मिट जाती और फिर कभी हमारे वर्तमान में लौट कर न आती। लेकिन अफ़सोस ऐसा होता नहीं है। अपने चहीते साथी, अपने चहीते दोस्त, अपने हमसफ़र की स्मृतियाँ अमिट होती है... एक बार बन गयी तो फिर कभी नहीं भूलती.. मरते दम तक हमारे साथ रहती है। जितना ज्यादा भुलाने की कोशिश करो.. उतनी ज्यादा याद आती है।

शायद इसीलिए हर धर्म ने मृत शरीर को किसी ने किसी तरह नष्ट करने की प्रथा बनाई होगी.. क्योंकि वो जान गए कि स्मृतियाँ शरीर से जुड़ी है.. जब तक शरीर नहीं मिटता स्मृतियाँ कभी नहीं मिटती।

जो आगे बढ़ भी जाते है या शायद आगे बढ़ जाने का स्वांग करते है उनके जीवन में भी सदैव एक कमी सी रहती है एक खालीपन सा रहता है.. अपने मनचाहे साथी का प्रेम और साथ हांसिल न कर पाने का दुःख उनके अचेतन मन में हंमेशा रहता है। फिर दुनिया की हर खुशी उन्हें हांसिल क्यों न हो जाए लेकिन वो हंमेशा अधूरी सी लगती है।

MOVING ON तब बेहद दुखद बन जाता है जब दोनों व्यक्तियों में से एक तो आसानी से MOVE ON हो जाता है लेकिन दूसरा बीतें पलों को भुला नहीं पाता, कठोर नहीं बन पाता... बड़ी ही दयनीय परिस्थिति हो जाती उसकी ।

MOVING ON शायद इसलिए भी मुमकिन नहीं क्योंकि प्यार की निशानियों को हम तभ भी पकडे रहते है जब प्यार/संवाद कब का खत्म हो चुका होता है लेकिन एक साथी ये आस लगाये बैठा रहता है कि शायद फिर साथ हासिल हो जाये... शायद फिर प्रेम की प्यास जग जाये.. शायद फिर सिलसिला बन जाये... लेकिन ऐसा होता नहीं... क्योंकि जिन्दगी के सफ़र में गुजर जाते है जो मुकाम वो फिर नहीं आते... ये सच शायद हम भुल जाते हैं।

इसलिए MOVING ON की सलाह देना बड़ा ही आसान है लेकिन MOVE ON होना बड़ा ही मुश्किल है... ईश्वर कभी किसी को ऐसी परिस्थिति में न डाले जब उसे MOVE ON करना पड़े।

लेकिन जब न चाहते हुए भी MOVE ON करना पड़ता है.. तब इस MOVE ON की प्रक्रिया को कम से कम दुखद बनाने के लिए कुछ प्रेक्टिकल मंत्र हैं जैसे कि,

1. इस तथ्य को स्वीकार करना कि अब सामने वाले व्यक्ति के जीवन में अब हमारी कोई जगह नहीं है।

2. प्रेम, भावनाएं, दोस्ती या सम्मान ज़बरदस्ती या किसी के आगे गिड़गिड़ाने से हासिल नहीं की जा सकती, ये स्वैच्छिक होती है।

3. स्मृतियों से चिपके रहने से हम अपना आत्म-सम्मान खोते जायेंगे और रोज़ अपनी नज़रो में गिरते जायेंगे इसीलिए बीती बातों को भुला कर आगे बढ़ने के अलावा हमारे पास कोई चारा नहीं, ये बाते हमें समझ लेनी चाहिए।

4. हमें आत्मनिरीक्षण करना चाहिए कि जो रिश्ता टूट गया उससे हमारी कौन-सी जरूरत पूरी हो रही थी.. क्यों उस रिश्ते से हमें श्रेष्ठता का आभास होता था.. क्या उस रिश्ते से हमें भरोसा, सुरक्षा या विश्वास मिल रहा था जो हमें नहीं मिल रहा.. क्या उस रिश्ते से हमें लग रहा था कि कोई तो है जो हमें सुनता है, हमारे विचारों की प्रशंसा करता है.. इन में से जिस सवाल का जवाब हमें हां में मिले तो फिर हमें अपने आसपास के सर्किल में ऐसे किसी और दोस्त, किसी और साथी को ढूंढना चाहिए जिससे हमारी जरूरत पूरे हो जाये ताकि MOVE ON आसन हो सके।

भीष्म पितामह की मृत्यु का रहस्य

श्रीमती हेमलता बी. पावागढ़ी
वरिष्ठ लिपिक
वित्त विभाग, कंडला

महाभारत युद्ध में कौरव पक्ष के सर्वश्रेष्ठ योद्धा भीष्म ही थे। पाण्डव व कौरव दोनों के पितामह होने के नाते इनका दोनों से ही समान प्रेम एवं सहानुभूति थी। वे दोनों का ही समानरूप से हित चाहते थे। फिर भी यह जानकर कि पाण्डव धर्म व न्याय के पक्षधर है, वे पाण्डवों के साथ विशेष सहानुभूति रखते थे और मन से उनकी विजय चाहते थे।

परंतु उन्होंने युद्ध में पाण्डवों का प्राणप्रण से जीतने की चेष्टा की। महाभारत युद्ध के अठारह दिनों में से दस दिन तक अकेले भीष्म पितामह ने कौरवों का सेनानायकत्व दिया और पाण्डव सेना के बड़े भाग का संहार कर डाला। वृद्ध होते हुए भी युद्ध में उन्होंने ऐसा अद्‌भुत पराक्रम दिखाया कि दो बार स्वयं भगवान श्री कृष्ण को अर्जुन की रक्षा के लिए, शस्त्र न उठाने की प्रतिज्ञा करने पर भी भीष्म के मुकाबले में खड़ा होना पड़ा।

अंत में पाण्डवों ने जब देखा कि भीष्म के रहते कौरवों पर विजय पाना कठिन व असंभव है, तब उन्होंने भीष्म पितामह के पास जाकर, उनकी मृत्यु का उपाय पूछने का निश्चय किया।

धर्मराज युधिष्ठिर ने पितामह भीष्म के पास जाकर कहा- हे पितामह ! आपकी दृष्टि में तो कौरव-पाण्डव बराबर है, परंतु फिर भी आप कौरव-सेना में मिल गये, जिन कौरवों के सौ भाई हैं।

हम केवल पांच है, फिर भी आप कौरवों की तरफ से युद्ध करते हुए, हमारी सेना का विनाश कर रहे हैं। अतः कृपाकर आप हमें विजय का मार्ग बताइये।

युधिष्ठिर की बात सुन, पितामह ने कहा- हे धर्मराज! तुम्हारी रक्षा जब स्वयं परब्रह्म परमेश्वर श्री कृष्ण कर रहे हैं, तो तुम्हारी विजय निश्चित है, किन्तु जब तक मेरे हाथ में अस्त्र-शस्त्र रहेंगे, तब तक कोई वीर हमें परास्त नहीं कर सकता।

अतः तुम मुझे परास्त करने के लिए प्रातः शिखण्डी को मेरे सामने युद्ध में लाना। मैं शिखण्डी पर प्रहार नहीं करूंगा क्योंकि द्रुपद पुत्र शिखण्डी पूर्वजन्म में स्त्री था। उसके पीछे से अर्जुन मुझ पर तीक्ष्ण बाणों का प्रहार करें। तब ही मेरी मृत्यु सम्भव है। प्रातःकाल होते ही भीषण युद्ध होने लगा।

अर्जुन ने धर्मराज युधिष्ठिर के बताये अनुसार शिखण्डी को आगे कर भीष्म पर बाणों की वर्षा की थी। जिस समय युद्ध में घायल होकर भीष्म धराशायी हुए, तब उनका रोम-रोम बाणों से बिंध गया था।

उस समय सूर्य दक्षिणयान में था। दक्षिणायान की देह त्याग के लिए उपयुक्त काल न समझ, वे अयन-परिवर्तन के समय तक उसी शरशय्या पर पड़े रहे, क्योंकि अपने पिता शान्तनु के वरदान के कारण मृत्यु उनकी इच्छा पर थी।

कौरवों ने उन का उपचार कराना चाहा, परन्तु वीरगति पाकर उन्होंने चिकित्सा कराना अपमान समझा। सब उनकी असाधारण धर्मनिष्ठा व साहस देखकर दंग थे।

भीष्म पितामह ने कुछ दिन बाद अन्न जल का त्याग कर दिया और फिर जितने दिन वे जीवित रहे, बाणों की मर्मातक पीड़ा के साथ-साथ भूख व प्यास की असहनीय वेदना भी सहन करते रहे।

भगवान श्री कृष्ण की प्रेरणा एवं शक्ति से उन्होंने युधिष्ठिर को लगातार कई दिनों तक वर्णाश्रम धर्म, राज धर्म, आप धर्म, मोक्ष धर्म, श्राद्ध धर्म, दान धर्म, स्त्री धर्म आदि विषयों पर उपदेश दिये, जो महाभारत के शांतिपर्व तथा अनुशासनपर्व में संग्रहीत हैं।

साक्षात्‌ धर्म के अंश से उत्पन्न हुए तथा धर्म की प्रत्यक्ष मूर्ति महाराज युधिष्ठिर की धर्म विषयक शंकाओं का निवारण करना भीष्म पितामह का ही काम था।

उनका उपदेश सुनने के लिए व्यास आदि महर्षि भी पधारे थे। उनकी अटूट भक्ति का ही फल था, जो अंत समय में भगवान श्रीकृष्ण ने उन्हें साक्षात्‌ दर्शन देकर कृतार्थ किया। तब भीष्म पितामह ने सही समय जान अपने प्राण त्याग दिये।

अयोध्या में राम

श्री करसन ए. धुआ,
कार्यालय अधीक्षक,
अभियांत्रिकी विभाग।

चर्चा है अखबारों में, टी.वी. में बाजारों में, डोली, दुल्हन, कहारों में,
सूरज, चंदा, तारों में, आँगन, द्वार, दीवारों में, घाटी और पठारों में,
लहरों और किनारों में, भाषण-कविता-नारों में, गाँव-गली-गलियारों में,
दिल्ली के दरबारों में, धीरे-धीरे चली भोली जनता बलिहारी राम लल्ला की,
जो कहते है राम आयेगे अयोध्या में, वो भी इंसान है राम लल्ला के नाम के,
निकल पड़ी है ये चिंगारी राम-नाम की, फिर भी हम इंसान है राम-नाम के,
जय श्रीराम जय श्रीराम, कहने वाले भारतीय इंसान है हम राम नाम के।
आखिर आ गए राम अयोध्या में, इसलिए हम-सब भारतीय है राम नाम के,
अयोध्या में राम-लल्ला की धुन है, दीप जलाये पूरे देश में राम नाम के।

कम्प्यूटर

श्रीमती डॉली दवे
पुत्रवधू - श्रीमती लता दवे
वरिष्ठ लिपिक,
अभियांत्रिकी विभाग

कम्प्यूटर आधुनिक तकनीक की एक महान खोज है, ये कम और श्रम शक्ति उच्च स्तर का परिणाम प्रदान करता है, एक समय विज्ञान में कम्प्यूटर का बनाया, किन्तु आज विज्ञान के कार्यभार को कम्प्यूटर ने संभाल रखा है, कम्प्यूटर मानव जाति के लिए विज्ञान का एक अद्भुत उपहार है।

कम्प्यूटर का उपयोग निर्धारित संख्या से लेकर इन्टरनेट, संचार, विज्ञान मानव संसाधन प्रबंधन व्यापार, मनोरंजन, शिक्षा आदि में देख सकते हैं। आज कम्प्यूटर हर क्षेत्र में अनिवार्य हो रहा है। आज इसकी मदद से हर व्यक्ति अपनी छोटी-बड़ी समस्याओ का समाधान कम्प्यूटर के जरिए आसानी से ढूढ़ लेता है।

कम्प्यूटर के आगमन ने मानव को सुविधा, सरलता, सुव्यवस्था सटीकता प्रदान की है, जीवन में इसे भगवान का वरदान समझकर उचित रूप से प्रयोग मे लाना चाहिए। कम्प्यूटर अगर लाभदायक है तो उसके अनुचित प्रयोग से वह विनाशकारी भी हो सकता है, सतकर्ता जरुरी है।

सावन की रिमझिम बूंदे

श्री जयेश शामजी देवरिया
सहायक,
अभियांत्रिकी विभाग

सावन की रिमझिम बूंदे खुशी का पैगाम लाई है,
तपती-जलती धरती के लिए प्यार का सलाम लाई है।
आकाश में काले बादल छाए और मौसम मस्ताना हो गया,
हर कोई झूम रहा मस्ती में, सब का मन मस्ताना हो गया।
नीले आसमान से शीतल स्नेह बरसने लगा है,
पेड़ पे बैठे पंछी का मन चहकने लगा है।
चमक रही है बिजली, पवन भी शोर मचा रहा,
गरज-गरज के बादल देखो बारिश की बूंदें गिरा रहा।
ध्वनि रिमझिम बारिश की बूंदो की, कानों को भाती है,
भीनी-भीनी महक मिट्टी की साँसों को महकाती है।
दूर ख़डे ये वृक्ष बड़े, देखते ही मन को भाते है,
पवन के जोर से देखो कैसे खेत-खलियान लहराते है।
नीलगगन का पंछी चुपके से किसी डाली पे बैठ गया है,
मौसम का देखकर नजारा उसका मन उत्साह से भर गया है।
वन में नाच रहा कोई मोर मतवाला हो गया है,
पूरी सृष्टि का रूप तो देखो कैसा हरियाला हो गया है।

दिल के खाली हाथ भी

श्रीमती हेमलता बी. पावागढ़ी
वरिष्ठ लिपिक
वित्त विभाग, कंडला

दिल के खाली हाथ भी हसरत चुरा लाये बहुत ।
यानी अपने वास्ते दौलत चुरा लाये बहुत ।।
टूटना भी इक कला है वक्त की ।
टूटते वक्तों से हम सीख चुरा लाये बहुत ।।
जंगलों में बोरियों के साये हैं या जिन्दगी ।
शहर की रोनक़ से हम वहशत चुरा लाये बहुत ।।
मुश्किल सफर दर्द और तजुर्बे ।
सबके बीच हम जन्नत चुरा लाये बहुत ।।
मुश्किलें साँसों की डग-मग हुई ऐसी कि हम ।
मुश्किलों के रंग में राहत चुरा लाये बहुत ।।

आयुर्वेद

श्रीमती लता दवे
वरिष्ठ लिपिक
अभियांत्रिकी विभाग

आयुर्वेद विश्व की सबसे पुरानी चिकित्सा प्रणालियों में से एक है। आयुर्वेद जीवन जीने का एक तरीका है। हमारा शरीर पूरी तरह से स्वस्थ रहे इसके लिए हमें बेहतर आहारायोग दिटाकिसफिकेशन, हर्बल उपचार, मेडीटेशन और बेहतर जीवनशैली आदि पर ध्यान देना चाहिए। आयुर्वेद लोगों के जीवन को स्वस्थ और संतुलित बनाने में मदद करता है। आयुर्वेद-शब्द का अर्थ दुआ-जीवन का विज्ञान। साधारण भाषा में कहे तो जीवन को ठीक प्रकार से जीने का विज्ञान ही आयुर्वेद है। क्योंकि यह विज्ञान केवल रोगों की चिकित्सा या रोगों का ही ज्ञान प्रदान नहीं कर्ता अपितु जीवन जीने के लिए सभी प्रकार के आवश्यक ज्ञान की प्राप्ति करता है। धन्वंतरी आयुर्वेद के देवता है वे विष्णु के अवतार माने जाते है।

व्यक्तिगत देखभाल संपूर्ण शरीर के स्वास्थ्य और प्राकृतिक उपचारों पर देने के साथ, आयुर्वेदिक चिकित्सा स्वास्थ्य देखभाल के भविष्य में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने की क्षमता रखती है, जैसे जैसे आयुर्वेद विकसित हो रहा है और आधुनिक दुनिया के अनुरूप ढल रहा है, इसके और भी अधिक महत्वपूर्ण प्रभावशाली चिकित्सा प्रणाली बनने की सम्भावना है। रोगी को सबसे पहले आयुर्वेदिक चिकित्सा करनी चाहिए क्योंकि आयुर्वेद से रोग का पूरी तरह से ठीक करने का वर्णन है।

नारी शक्ति

श्रीमती किरण जी. उधानी
वरिष्ठ लिपिक
समुद्री विभाग

बिना सीमाओं के रोशनी की ओर, चलो महिलाएं, लैके बढ़ते कदम साथ में।
शक्ति का संग्रह, विश्व की ओर, उठो महिलाएं, अपना विरोध हाथ में।
खुले आसमान में, सपनों की उड़ान, हर रोज़ नए संघर्ष, हर दिन एक अफ़साना।
उठो महिलाएं, खुद की ताकत पहचानों, अपने सपनों को हकीकत में बदलो।
समाज में समानता, अधिकारों का इकरार, महिलाए निर्बलता का अंत करें विकार।
हर एक महिला, संकल्पित हो जिन्दगी में खुद को निर्माण करें, अपने सफर की राह में।
महिलाओं की शक्ति, समृद्धि का अड़हर, हर विपदा का सामना, खुद से ना हार।
सबल, साहसी, निर्भिक और मजबूत, ये हैं महिलाओं की सच्ची शक्ति की सृष्टि।
उठो महिलाएं, खुद को स्वतंत्र बनाओ, बदलो दुनिया को, खुद को उसका बदलाव बनाओ।
काबिलियत की राह पर, आगे बढ़ते चलो, महिलाओं की शक्ति को निरंतर पुकारते चलो।
बिना सीमाओं के रोशनी की ओर, चलो महिलाएं, बढ़ते कदम साथ में।

जीवन की अनमोल बातें

श्रीमती सोनिया जे. हेमनानी
प्रधान लिपिक
यांत्रिक अभियांत्रिकी प्रभाग

आग लगानेवालों को क्या खबर
रुख हवाओं ने बदला तो खाक वो भी होंगे,
एकबार तुम्हारे पास जो नही है उसकी चिंता छोड़ दो
जो हे तुम्हारे पास उसका आनंद ले सकोगे
परिवार हो या समाज, जीवन में सच्चे आनंद की अनुभूति मिलजुल कर रहने में ही है।

जिंदगी में तीन चीजों पर विशेष ध्यान देना चाहिए

वादा दोस्ती और रिश्ते क्योंकि ये शोर नहीं मचाते परंतु जब टूटते है तो
एक गहरा सन्नाटा छोड़ जाते है।
आरंभ हो अंत हो, मन इतना भी स्वतंत्र नहीं,
दुःख मिले थोड़ा ही सही परंतु मन में षडयंत्र नहीं।

मौत

जिंदगी में दो मिनट
कोई मेरे पास ना बैठा
आज सब मेरे पास बैठे जा रहे हैं
कोई तोहफा ना मिला आज तक
आज फूल ही फूल दिए जा रहे है
दो कदम साथ चलने
को तैयार ना था कोई
और आज काफिला बन
साथ चले जा रहे थे ।

तरस गए थे हम
किसी एक हाथ के लिए
और आज कंधे से कंधे
दिए जा रहे है,

आज पता चला कि
मौत कितनी हसीन होती है
कम्बखत हम तो यू ही
जिंदगी जिए जा रहे थे ।

पत्रिका में अभिव्यक्त विचारों से पोर्ट ट्रस्ट का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। पत्रिका में उल्लिखित नियम आदि के मूल पाठ को ही प्राधिकृत माना जायेगा।

इतिहास

श्रीमती ज्योति एन. भावनानी
प्रधान लिपिक
सामान्य प्रशासन विभाग

काश ऐसा इतिहास रचे कि जिसमें,
न कोई लड़ाई न कहीं झगड़ा हो।
हर तरफ आपस में सबका,
बस केवल प्यार ही प्यार हो।

न जात-पात का भेद हो जिसमें,
न नफरत की दीवार हो।
एक दूजे का हो साथ सबको,
मिलकर चलने को हरकोई तैयार हो।

लालच से हर कोई दूर हो जिसमें,
सब के मन मे संतोष का भाव हो।
भ्रष्टाचार का तो भूले से भी,
कहीं कोई नामोनिशान न हो।

देशप्रेम हो सब के मन में जिसमें,
और सच्चाई की ज्योति हो,
कोई मुश्किल न हो जीवन में,
हर तरफ बस शाँति हो।

घर में बड़ो का मान हो जिसमें,
न उन का कभी अपमान हो।
घर के बाहर नारी जाति की,
अस्मत पे कोई वार न हो।

रिश्तों की मर्यादा हो जिसमें,
न परिवार में कोई तकरार हो,
न द्वेष, क्लेश हो किसी घर में,
न किसी बीमारी का राज हो।

हरकोई अपनी सीमा में खुश हो जिसमें,
कही कोई घुसपेठी न हो।
न कहीं आतंकवाद हो,
न सीमा पे कोई जवान कुर्बान हो।

हर तरफ हरियाली हो जिसमें,
और आबाद हर किसान हो,
नदियाँ, झरने, पर्वत और वृक्षों से,
प्रकृति के सौंदर्य का निखार हो।

हर कोई कर्तव्यनिष्ठ हो जिसमें,
और हर किसी को रोजगार प्राप्त हो,
कोई भी भूखा न हो,
हर किसी के सिर पे छत का साया हो।

हर जगह पर धर्म हो जिसमें,
और हर जगह ईमान हो।
धर्म जाति के नाम पर कभी,
न कोई दंगा फसाद हो।

हर किसी के मन में जिसमें,
एक दूजे के लिए सम्मान हो।
बेकार की बहस में उलझकर,
सार्वजनिक सम्पति का न नुकसान हो।

अपनी संस्कृति व सभ्यता का गुणगान हो जिसमें,
और अपनी भाषाओं में बोलचाल हो।
अपनी वेशभूषाओं का इस्तेमाल हो,
और अपने रीतिरस्मों पे अभिमान हो।

पशु पक्षियों की रक्षा हो जिसमें,
न उनका कत्लेआम हो।
अपने निजी स्वार्थ के लिए,
न उनका व्यापार हो।

मेरे भारत का हर कहीं मान हो जिसमें,
और हर जगह मेरे भारत का नाम हो।
माँ सरस्वती का वरदान हो सभी को,
और मेरे भारत की ऊँची शान हो।

काश ऐसा इतिहास रचे कि जिसके,
एक एक पन्ने पर,
मेरे ऐसे भारत का नाम,
स्वर्ण अक्षरों में दर्ज हो।

ऐसा इतिहास जिसके हर एक पन्ने पे,
विश्वशांति और आपसी बँधुत्व के किस्से,
स्वर्ण अक्षरों में दर्ज हो,
स्वर्ण अक्षरों में दर्ज हो।

वात्सल्य

श्री कैलाश टी. सासिया
सहायक,
यातायात विभाग

हे जननी, जीवनदायिनी माँ, तू ही सर्वस्व है
तेरी ममता की छाँव में बसा, सारा विश्व है।

जीवन के सर्जन में, भगवान् के बाद तुम ही हो
धरती पर भगवान् होने का एहसास तुम हो
ईश्वर भी जिसकी ममता पाना चाहें वह तुम हो
तुम ही यशोदा, तुम ही देवकी, कौशल्या भी तुम हो।

अपनी कोख में पालकर, पीड़ा सारी हसते हसते सहती हो
अपने खून से सींचकर, निर्माण नए जीव का करती हो
दूध की अमृतधारा पिलाकर, जीवन अमृतमय करती हो
धन्य हो गया मैं, मेरे लिये तुम क्या क्या करती हो।

जीवन का पहला कदम तेरी ऊँगली पकड़कर चला हूँ
आजतक लड़खड़ाया नहीं जीवन में, इस तरह पला हूँ
जीवन का पहला शब्द माँ पुकारा था और पुकारता चला हूँ
तेरे आँचल की छाँव के सहारे हर धूप से लड़ा हूँ।

बचपन की हर शरारत आपने हसते हुए माफ़ कर दी
गुरु बनकर जो संस्कार दिए, उनसे जिंदगी आबाद कर दी
मेरी खुशी के लिए अपनी खुशी, हसकर कुर्बान कर दी
जीवन के हर संघर्ष मैं, अपनी ममता की ढाल प्रदान कर दी।

जब भी हो मुश्किल, बस एक तेरा नाम याद आता है
इतनी शक्ति है तेरे प्यार में, दुःख दर्द भाग जाता है।

अपनी ममता मुझ पर जीवनभर ऐसे ही बरसाती जाना
माँ का दिया हुआ प्यार, संस्कार, कभी भूल न जाना।

हे जननी, जीवनदायिनी माँ, तू ही सर्वस्व है
तेरी ममता की छांव में बसा, सारा विश्व है।

शिक्षा – हथियार भी, ढाल भी

श्री निकुंज सासिया
सुपुत्र श्री कैलाश टी. सासिया
सहायक,
यातायात विभाग

आज के आधुनिक तकनीकी संसार में शिक्षा काफी अहम है। आजकल के समय में शिक्षा के स्तर को बढ़ाने के लिए बहुत सारे तरीके अपनाये जाते हैं। वर्तमान समय में शिक्षा का पूरा तंत्र अब बदल चुका है। हम अब 12वीं कक्षा के बाद डिस्टेंस एजूकेशन के माध्यम से भी नौकरी के साथ पढ़ाई भी कर सकते हैं। शिक्षा बहुत महंगी नहीं है, कोई भी कम धन होने के बाद भी अपनी पढ़ाई जारी रख सकता है। दूरस्थ शिक्षा के माध्यम से हम आसानी से किसी भी बड़े और प्रसिद्ध विश्वविद्यालय में बहुत कम शुल्क में प्रवेश ले सकते हैं। अन्य छोटे संस्थान भी किसी विशेष क्षेत्र में कौशल को बढ़ावा देने के लिए शिक्षा प्रदान कर रहे हैं। शिक्षा के महत्व को सरकार भी अब समझ रही है और सभी नागरिकों की शिक्षा के लिए निरंतर प्रयास कर रही है।

यह लोगों की सोच को सकारात्मक विचार लाकर बदलती है और नकारात्मक विचारों की हटाती है। बचपन में ही हमारे माता-पिता हमारे मस्तिष्क को शिक्षा की ओर ले जाने में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। वे प्रसिद्ध शैक्षणिक संस्था में हमारा दाखिला कराकर हमें अच्छी शिक्षा प्रदान करने का हर संभव प्रयास करते हैं। यह हमें तकनीकी और उच्च कौशल वाले ज्ञान के साथ ही पूरे संसार में हमारे विचारों को विकसित करने की क्षमता प्रदान करते है। अपने कौशल और ज्ञान को बढ़ाने का सबसे अच्छे तरीके अखबारों को पढ़ना, टीवी पर ज्ञानवर्धक कार्यक्रमों को देखना, अच्छे लेखकों की किताबें पढ़ना आदि है। शिक्षा हमें अधिक सभ्य और बेहतर शिक्षित बनाती है। यह समाज में बेहतर पद और नौकरी में कल्पना किए गए पद को प्राप्त करने में हमारी मदद करती है।

शिक्षा हम सभी के उज्जवल भविष्य के लिए आवश्यक उपकरण है। हम जीवन में शिक्षा के इस उपकरण का प्रयोग करके कुछ भी अच्छा प्राप्त कर सकते है। शिक्षा का उच्च स्तर लोगों को सामाजिक और पारिवारिक आदर और एक अलग पहचान बनाने में मदद करता है। शिक्षा का समय सभी के लिए सामाजिक और व्यक्तिगत रूप से बहुत महत्वपूर्ण समय होता है। यह एक व्यक्ति को जीवन में एक अलग स्तर और अच्छाई की भावना को विकसित करती है।

शिक्षा किसी भी बड़ी पारिवारिक, सामाजिक और यहाँ तक कि राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं को भी दूर करने की क्षमता प्रदान करती है। हम से कोई भी जीवन के हरेक पहलू में शिक्षा के महत्व को अनदेखा नहीं कर सकता। यह मस्तिष्क को सकारात्मकता की ओर मोड़ती है और सभी मानसिक और नकारात्मक विचारधाराओं को हटाती है। सबसे पहले शिक्षा समाज में ज्ञान के प्रसार में मदद करती है। यह शायद शिक्षा का सबसे उल्लेखनीय पहलू है। शिक्षित समाज में ज्ञान का तेजी से प्रसार होता है। इसके अलावा, शिक्षा द्वारा ज्ञान का एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में स्थानांतरण होता है।

विशाल चुनौतियां विशालतम अवसर

श्रीमती लता दवे
वरिष्ठ लिपिक
अभियांत्रिकी विभाग

चुनौतियों का हम करे मुकाबला
अवसर हाथ से निकल ना जाए
नई ऊंचाइयों को छूते जाए,
आओ मिलकर कदम बढ़ाए ।
प्रतिस्पर्धा के इस दौर में,
बदलावों की नई लहर में,
आशाओं के हम दीप जलाएं,
आओ मिलकर कदम बढ़ाएं ।
बाधाओं के कंटील पथ पर
मेहनत से हम फूल बिछाएँ
टीम भावना को अपनाएं,
आओ मिलकर कदम बढ़ाएं ।
संसाधनो को बनाए शक्ति
तकनीकी प्रयोग को हम बढ़ाए,
उत्कृष्टता का परचम लहराएं,
आओ मिलकर कदम बढ़ाएं ।
चुनौतियां अगर है बड़ी
तो अवसर भी होगे अपार,
हौंसलों को हम पंख लगाएं,
आओ मिलकर कदम बढ़ाएं ।

जिंदगी की राह

श्रीमती किरण जी. उधानी
वरिष्ठ लिपिक
समुद्री विभाग

जिन्दगी की राहों में चलते-चलते, कभी खुद से मिले, कभी तुझसे मिलते।
हर कदम पे एक नया संघर्ष हो, हर लम्हा एक नया अनुभव हो।
कभी खुशियों के गीत गाएं, कभी गम़ के साथ मुस्कुराएं।
जीवन की मिट्टी में उगते हैं सपने, कभी पल भर में, कभी लम्हों के बदले।
हर दिन लाता है नया सवेरा, हर रात ले आती है नयी बहार।
कभी राहों में हो मंजिल की तलाश, कभी राहों में हो खुद की खोज।
ज़िन्दगी का सफर है ये कहानी, जिन्दगी की कविता, जिन्दगी की कहानी।

‘हिंदी द्वारा सारे भारत को एक सूत्र में पिरोया जा सकता है।’ - स्वामी दयानंद

टिपटिपवा

श्रीमती पल्लवी सिंह
प्रबंधन प्रशिक्षार्थी
सामान्य प्रशासन विभाग

गाँव में रहने वाली एक बुढ़िया का 5 बरस का पोता था। नटखट और चंचल। बिना कहानी सुने सोता ही न था। उसे सुलाने के लिए बुढ़िया रोज़ नई-नई कहानियाँ सुनाती थी, जिसे सुनते-सुनते पोता सो जाया करता था।

एक रात वह फिर कहानी सुनने की जिद़ करने लगा। उस रात बुढ़िया कुछ परेशान थी। बाहर मूसलाधार बारिश हो रही थी। गाँव के सारे खेत-खलिहानों में बारिश का पानी भर गया था। बुढ़िया की छोटी से झोपड़ी में भी कई जगह से पानी टपकने लगा था। टिप-टिप की आवाजें आ रही थी। मगर पोते को इन सबसे कोई मतलब ना था, उसे तो कहानी सुननी थी। वह लगातार ज़िद कर रहा था।

बुढ़िया खींझने लगी वह बोली,'बेटा, अब का कहानी सुनाये? ई टिपटिपवा से जान बचे, तब ना!'

टिपटिपवा सुनकर पोता आश्चर्य में पड़ गया और बुढ़िया से पूछने लगा,'दादी, ये टिपटिपवा क्या होता है? क्या शेर-बाध से भी बड़ा जानवर होता है?'

बुढ़िया ने एक बार छत से गिरते पानी को देखा और बोली,'हाँ बचवा! न शेरवा, न बघवा के डर, डर तो टिपटिपवा का डर।'

उस समय संयोग ऐसा हुआ कि बारिश से बचने के लिए एक बाघ बुढ़िया की झोपड़ी के पीछे बैठा हुआ था। जब उसने बुढ़िया की बात सुनी, तो वह डर गया। वह सोचने लगा कि टिपटिपवा जरूर को बहुत विशाल और बलशाली जानवर होगा। शेर और बाध से भी विशाल और बलशाली। इसलिए तो बुढ़िया को शेर और बाघ से ज्यादा टिपटिपवा का डर सता रहा है। अगर मैं यहाँ रुका, तो जरूर वह टिपटिपवा मुझ पर हमला कर मुझे मार डालेगा। अब मैं यहाँ नहीं ठहर सकता। मुझे भाग जाना चाहिए।

उसके बाद बाघ वहाँ नहीं रुका, तेजी से भागने लगा। भागते-भागते वह गाँव के एक धोबी के घर पहुँचा। उस धोबी के पास एक ही गधा था, जिस पर कपड़े लादकर वही नदी पर ले जाता था। उसने उसे सारा दिन ढूंढा, मगर वह नहीं मिला था। एक तो उसका गधा भाग गया, उस पर मूसलाधार बारिश। इसलिए वह बहुत चिंतित था।

उसकी चिंता देख उसकी पत्नी से सुझाव दिया,'पंडितजी से जाकर क्यों नहीं पूछ लेते। वे बड़े ही ज्ञानी है। उन्हें सबकुछ पता होता है।'

धोबी को यह बात जम गई। वह एक लट्ठ लेकर पंडितजी ने घर जा पहुँजा। वहाँ उसने देखा कि पंडित जी के घर पानी भरा हुआ है और वो पानी बाल्टी में भर-भर कर बाहर फेंक रहे है।

धोबी उन्हें प्रणाम कर बोला,'पंडित जी! मेरा गधा पता नहीं कहाँ भाग गया है। सुबह से ढूंढ रहा हूँ। किंतु मिल नहीं रहा। अपनी पोथी देखकर बता दीजिये कि वह कहाँ मिलेगा।'

पंडित जी बारिश का पानी घर में भर जाने से परेशान थे। पानी घर से बाहर फेंक-फेंक कर थक चुके थे। धोबी की बात सुनकर वे बड़े क्रोधित हुए और बोले,'अरे मेरी पोथी में क्या लिखा होगा। तेरा गधा पड़ा होगा, कहीं नदी-पोखर के किनारे। जाकर वहाँ ढूंढ ।'

यह कहकर वह फिर अपने काम में लग गये। धोबी पंडित के कहे अनुसार गाँव के तालाब की ओर चल पड़ा। तालाब किनारे लंबी-लंबी घास उगी थी। उसी घास में धोबी अपने गधे को ढूंढने लगा।

बुढ़िया के घर से लगा बाघ वहीं घुस के पीछे छुपा बैठा था। धोबी ने सोचा कि वो उसका भागा हुआ गधा है। दिन भर का गुस्सा निकालते हुए वह उसे बेदम पीटने लगा। बाघ घबरा गया।

उसने सोचा कि लगता है यही टिपटिपवा है। इसने मुझे ढूंढ ही लिया। अब इसकी बात न मानी, तो ये मुझे जान से मार डालेगा। अब मुझे वही करना चाहिए, जो ये कहता है।

उधर धोबी ने उसे मन भर पीटा, फिर उसके कान पकड़कर खींचता हुआ घर की तरफ ले जाने लगा। बाघ डरा हुआ था। वह चुपचाप उसके साथ चलने लगा। घर पहुँचकर धोबी ने बाध को घर से बाहर खूंटे से बांध दिया। वह थका हुआ था, इसलिए सोने चला गया।

अगली सुबह सारे गाँव में हाहाकार मच गई, धोबी के घर के सामने बाघ जो बंधा हुआ था।

किसान की दुर्दशा पर

श्रीमती हेमलता बी. पवागढ़ी
वरिष्ठ लिपिक
वित्त विभाग, कंडला

देख रहा धरती पुत्र संशय से बादल
क्योंकि तैयार खड़ी खेत में गेहूं की फसल ।।
बादलो कें गर्जन से दिल बैठ जाता प्रतिपल
साल भर की मेहनत पल में हो सकती है निष्फल ।।
तभी पूरब से उठा एक प्रचंड तूफ़ान
कई खेतो से उजड़ गए किसानों के मचान ।।
वायु के वेग से आम के बौर झड़ गए
और कई परिंदो के घोंसले उजड़ गए ।।
अंधड़ के साथ हो रही वर्षा
गिर रहे ओले उड़ रही रेत
और देख रहा है किसान
निराशा से अपने खेत ।।
जब-जब चमकती शून्य में बिजली
और बादलों में होता शोर
असहाय सा देखता आंखे उठाकर
किसान देखता आसमान की ओर ।।
अर्धांगिनी को देता दिलासा
दिल पर पत्थर रखकर
शायद अपनी किस्मत में ना थी
ये गेहूं की फसल ।।
इसलिए बेमौसम बरसे
आसमान से बादल
ऊपर वाला फिर भी देगा
और फिर भी नहीं रोते ये पागल ।।

सेब का पेड़

श्री मनजी एम. मकवाणा
वरिष्ठ लिपिक
सामान्य प्रशासन विभाग

एक समय की बात है, एक जंगल में सेब का एक बड़ा पेड़ था। एक बच्चा रोज उस पेड़ पर खेलने आया करता था। वह कभी पेड़ की डाली से लटकता, कभी फल तोड़ता, कभी उछल कूद करता था, सेब का पेड़ भी उस बच्चे से काफ़ी खुश रहता था।

कई साल इस तरह बीत गये। अचानक एक दिन बच्चा कही चला गया और फिर लौट के नहीं आया, पेड़ ने उसका काफ़ी इंतजार किया पर वह नहीं आया। अब तो पेड़ उदास हो गया था।

काफी समय बाद वह बच्चा फिर से पेड़ के पास आया पर वह अब कुछ बड़ा हो गया था। पेड़ उसे देखकर काफ़ी खुश हुआ और उसे अपने साथ खेलने के लिए कहा। पर बच्चा उदास होते हुए बोला कि अब वह बड़ा हो गया है अब वह उसके साथ नहीं खेल सकता। बच्चा बोला की,'अब मुझे खिलोने से खेलना अच्छा लगता है, पर मेरे पास खिलोने खरीदने के लिए पैसे नहीं है'

पेड़ बोला,'उदास ना हो तुम मेरे फल (सेब) तोड़ लो और उन्हें बेच कर खिलोने खरीद लो। बच्चा खुशी खुशी फल (सेब) तोड़के ले गया लेकिन वह फिर बहुत दिनों तक वापस नहीं आया। पेड़ बहुत दु:खी हुआ।

अचानक बहुत दिनों बाद बच्चा जो अब जवान हो गया था वापस आया, पेड़ बहुत खुश हुआ और उसे अपने साथ खेलने के लिए कहा । पर लड़के ने कहा कि,'वह पेड़ के साथ नहीं खेल सकता अब मुझे कुछ पैसे चाहिए क्यूंकि मुझे अपने बच्चों के लिए घर बनाना है।'

पेड़ बोला,'मेरी शाखाएँ बहुत मज़बूत है तुम इन्हें काट कर ले जाओ और अपना घर बना लो। अब लड़के ने खुशी-खुशी सारी शाखाएँ काट डाली और लेकर चला गया। उस समय पेड़ उसे देखकर बहोत खुश हुआ लेकिन वह फिर कभी वापस नहीं आया। और फिर से वह पेड़ अकेला और उदास हो गया था।

अंत में वह काफी दिनों बाद थका हुआ वहा आया।

तभी पेड़ उदास होते हुए बोला की,'अब मेरे पास ना फल हैं और ना ही लकड़ी अब में तुम्हारी मदद भी नहीं कर सकता।

बूढ़ा बोला कि,'अब उसे कोई सहायता नहीं चाहिए बस एक जगह चाहिए जहाँ वह बाकी जिंदगी आराम से गुजार सके।' पेड़ ने उसे अपनी जड़ो में पनाह दी और बूढ़ा हंमेशा वही रहने लगा।

यही कहानी आज हम सब की भी है। मित्रों इसी पेड़ की तरह हमारे माता-पिता भी होते है, जब हम छोटे होते हैं तो उनके साथ खेलकर बड़े होते हैं और बड़े होकर उन्हें छोड़ कर चले जाते हैं और तभी वापस आते हैं जब हमें कोई जरूरत होती है। धीरे-धीरे ऐसे ही जीवन बीत जाता है। हमें पेड़ रूपी माता-पिता की सेवा करनी चाहिए ना कि सिर्फ उनसे फ़ायदा लेना चाहिए।

इस कहानी में हमें दिखाई देता है की उस पेड़ के लिए वह बच्चा बहुत महत्वपूर्ण था, और वह बच्चा बार-बार जरुरत के अनुसार उस सेब के पेड़ का उपयोग करता था, ये सब जानते हुए भी वह उसका केवल उपयोग ही कर रहा है। इसी तरह आज-कल हम भी हमारे माता-पिता का जरुरत के अनुसार उपयोग करते हैं। और बड़े होने पर उन्हें भूल जाते है। हमें हमेशा हमारे माता-पिता की सेवा करनी चाहिए, उनका सम्मान करना चाहिए। और हमेशा, भले ही हम कितने भी व्यस्त क्यूं ना हो उनके लिए थोड़ा समय तो भी निकलते रहना चाहिए।

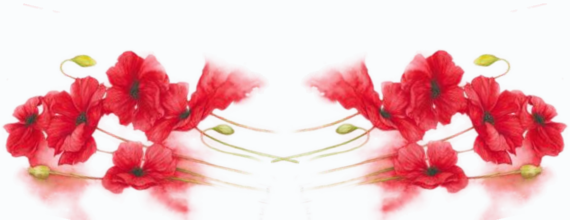

जिंदगी – एक अहसास

श्रीमती अंजु बी. आहुजा
वरिष्ठ लिपिक
समुद्री विभाग

एक आशा है जिंदगी, एक अहसास है जिंदगी,
बिना देखे जिंदा रखे, वह सांस है जिंदगी ।
आशा में है कटती कि, रोशनी तो दिन में होगी ।
जब आए चैन की नींद, वह रात है जिंदगी ।

उम्र गुजर जाती, सुख-दुःख के चक्रो में चलके,
लोगों से मिलना बिछड़ना, यही जज़्बात है जिंदगी ।
अपमान के पल, सम्मान के प्याले भर देती जिन्दगी,
जो जैसा करता वैसा पाता का नाम है ये जिन्दगी,
कही आराम से कटती, कही काटनी पड़ती है जिन्दगी ।

समय के साथ चलने का काम है जिन्दगी,
कोई सब कुछ खोता, कोई सब कुछ पाता,
बस खोना और पाना यहाँ, नतीजा है जिन्दगी ।
गवां देते सब कुछ यहाँ दूजे की खुशी में,
खुद को मिटा देना भी ईमान है जिन्दगी ।
पल भर में छीन लेती खुशियां कभी,
उम्र भर जो रुलाये, बेईमान है जिन्दगी ।

जीवन में खेल का महत्व

श्री यश दवे
सुपुत्र श्रीमती लता दवे
वरिष्ठ लिपिक
अभियांत्रिकी विभाग

हमारे जीवन में खेलो का काफी बड़ा महत्व है। खेल खेलने से हमें कई तरह के लाभ मिलते है। यदि हम खेल खेलते है उससे हमें जो फायदे मिलते है, जिससे हम बहुत कम बार बीमार पड़ते है। खेल खेलने से हमारा शारीरिक और मानसिक विकास होता है। शारीरिक विकास व्यायाम और खेल-कूद द्वारा संभव है। इसलिए खेल-कूद नियमित रूप से करना चाहिए। भारत में राष्ट्रीय खेल दिवस हर साल 29 अगस्त को मनाया जाता है।

खेल हमारे लिए सर्वोत्तम शारीरिक व्यायाम है। ज्यादातर आउटडोर खेल जेसे की क्रिकेट, फुटबोल ओर हॉकी सबसे अच्छा विकल्प है। इसलिए स्वास्थ्य को बेहतर बनाने के लिए हमारे जीवन में बहुत महत्व है। सिर्फ स्वास्थ्य में ही नहीं, खेल हमारे नेतृत्व कौशल को बेहतर बनाने में मदद करते है। जब आप एक कप्तान के रूप में अपनी क्रिकेट या फुटबोल टीम का नेतृत्व करते है तो आप स्वभाविक रूप से सीखते है कि प्रबंधन कैसे किया जाए। शतरंज जैसे कुछ इनडोर खेल हमारे दिमाग को विकसित करने और हमारी रचनात्मकता को बढ़ाने में मदद करते है। यह खेल हमारे मानसिक विकास के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। इसलिए मानव जीवन में प्रत्येक खेल का बहुत महत्व है।

मेरे गुरुवर

श्री चिराग निहलानी
सुपुत्र श्रीमती आरती निहलानी
अभियांत्रिकी विभाग

वाणी शीतल चन्द्रमा, मुखमण्डल सूर्य समान
गुरु चरनन त्रिलोक है, गुरु अमृत की खान
गुरु कृपा मम जीवन पर गुरु ही मेरी शान
तिन लोक चारों दिशा में मेरा गुरु महान

लक्ष्य प्राप्त कर सकू,
बन सकू आपका अभिमान,
जब महसूस किया मैंने हारा
बहुत काम आया मुझे गुरु ज्ञान
मुझे इस योग्य बनाया
सिरमोर गुरु को प्रणाम

प्रथम गुरु गर माँ है तो
पिता का ज्ञान भी है सहारा
गुरू के आशीर्वाद से
महेकता ये जीवन सारा
बेदाग़ गुरु हैं मेरा बे हिसाब दे जाता हैं,
बे नकाब कर मेरे अवगुणों को
बस ज्ञान की ज्योत जलाता हैं।

गुमनामी के अंधेरो को,
दे रोशनी पहेचान बनाते
कभी वशिष्ठ कभी द्रोणाचार्य बन
जग को राम अर्जुन दे जाते
बनते पथदर्शक वो हमेशां
बन सारथि राह दिखाते
ऐसे गुरुवर के चरनों हम
नतमस्तक बन शीश झुकाते।

ए जिंदगी तुझे समझ न पाया मैं

श्री जयेश शामजी देवरिया
सहायक,
अभियांत्रिकी विभाग

ए जिंदगी तुझे समझ न पाया मैं,
खुशियों के मेले से गम लेके आया मैं।
ए जिंदगी तुझे समझ न पाया मैं।

न करना था जिनपे एतबार उनपे भरोसा करके आया मैं,
न थी जिन्हें प्यार की कदर उनपे प्यार लुटाके आया मैं।
ए जिंदगी तुझे समझ न पाया मैं।

अपनी खुशी को लुटा के भी जिनके लिए खुशियाँ लाया मैं,
आज वो खुश है मगर क्यू लग रहा जैसे लुटा हूँ मैं।
ए जिंदगी तुझे समझ न पाया मैं।

लोग चलते रहे अपनी चाल और देखता रहा मैं
मतलब की इस दुनिया में भी दिल की बात सुनता रहा मैं।
ए जिंदगी तुझे समझ न पाया मैं।

किसने किसको समझा है, किसने किस को जाना है,
हर किसी को मतलब से प्यार है,
और इस मतलब के बाजार में प्यार ढूँढता रहा मैं।
ए जिंदगी तुझे समझ न पाया मैं।

बेकसूर होते हुए भी हमेश कटगरे में खड़ा रहा मैं,
सब की बाते, सब की शिकायते और सब के सितम सहता रहा मैं।
ए जिंदगी तुझे समझ न पाया मैं।

न थी जिनसे उम्मीद कोई चाहत की, उन्हें चाहता रहा मैं,
ए खुदा कैसी बेवकूफी जिंदगीभर करता रहा मैं।
ए जिंदगी तुझे समझ न पाया मैं।

लोगो की भीड़ में जो सुकून ढूँढता रहा मैं,
वो सुकून मेरे अंदर ही था ये न जान पाया मैं।
ए जिंदगी तुझको समझ न पाया मैं।

प्रकृति का संदेश

श्रीमती राजुबेन करसन धुआ
कार्यालय परिचालक
अभियांत्रिकी विभाग

पर्वत कहता शीश उठाकर, तुम भी प्रकृति प्रेम में ऊँचे बन जाया करो।
सागर कहता है लहराकर, तुम मन में प्रकृति प्रेम की गहराई लाया करो।
समझ रहे हो क्या कहती है प्रकृति, उठ कर, गिर कर भी तरल तरंग लाया करो।
भर लो दिल में प्रकृति की मीठी मृदुल उमंग, पृथ्वी कहती है धैर्य छोड़ा न करो।
कितना भी हो सिर पर भार, प्रकृति-फैलो इतना कि थक जाने का न हो अंणसार।
एक कर लो पृथ्वी-नभ, फिर हम भी साथ में प्रकृति के प्रेम में ढक ले सारा संसार।

वसंत पंचमी – 2024

श्री विनोद सी. दवे
श्रम निरीक्षक
सीएचडी
(सेवा निवृत)

हिंदू धर्म में विद्या की माता देवी सरस्वती के लिए वसंत पंचमी का दिन बहुत महत्वपूर्ण माना जाता है। इसेभी पंचमी और सरस्वती पंचमी के नाम से भी जाना जाता है। इस साल वसंतपंचमी का त्योहार 14 फरवरी को मनाया जाएगा। माना जाता है कि वसंत पंचमी के दिन देवी सरस्वती की पूजा करने से बुद्धि मिलती है और पढ़ाई में सफलता मिलती है। वसंत पंचमी पर्व पर विष्णु और सरस्वती की पूजा करने की परंपरा है। इस दिन सुबह स्नान करके पीले वस्त्र धारण करने चाहिए और केसर से अभिषेक कर धूप-दीप और नैवेद्य अर्पित करना चाहिए।

देवी सरस्वती की पूजा से पहले गणपति की पूजा करनी चाहिए और फिर शरदम्बा की मूर्ति, पुस्तकों और कलम की पूजा करनी चाहिए। सरस्वती का पूजन षेडशोपचार से करना चाहिए। पूजा के बाद देवी सरस्वती को परमन्नम और पुलिहोरानी चढ़ाना चाहिए। यदि आप वसंत पंचमी पर संगीत, ललित कला, गायन, लेखन आदि शुरू करते हैं, तो आप निश्चित रूप से जीवन में सफल होंगे। पंडितो का कहना है कि वसंत पंचमी के दिन पढ़ाई करने से मां सरस्वती की कृपा प्राप्त होती है।

और आज दिनांक 14/2/2024 को एक नया संयोग बन गया है कि आज प्रेम का इकरार करने वाले नए युवा पीढ़ी के लिए वेलेंटाइन डे भी है! सभी को शायद याद होगा कि दिनांक 7/2/2024 को रोज़ डे था! भूल गए होंगे! बस बसंत पंचमी से हमारे नए वर्ष के त्योहारों की शुरुआत होती है! होली धुलेती शिवरात्रि एवं पूरे देश भर में हर महीने एक त्योहार हम सब भारत वासी मनाते है! पुरानी फिल्मों में एवं कवि साहित्य जगत एवं कलाकारों को वसंत ऋतु आई है! सब कुछ वृक्षों के पते से पता चल जाता है! पूरी कुदरत सुगंधी वातावरण मनमोहन हो जाता है! पशु पक्षी प्राणियों एवं मनुष्यों पर भी उसका असर पड़ता है। ठंडी का यह आखरी महीना होता है। पूजा उपासना मांगलिक कार्यो एवम् शुभ कार्यो का प्रारंभ वसंत पंचमी तिथि से पूरा सालभर चालू हो जाता है। सभी युवा वर्ग विद्यार्थी एवं कवि साहित्य को एवं पोर्ट के सभी सदस्यों को वसंत पंचमी की हार्दिक शुभकामनाएं।

टाइमपास

श्री प्रदीप पाण्डेय
वरिष्ठ लिपिक
सामान्य प्रशासन विभाग

शर्मा जी सरकारी सेवानिवृत कर्मचारी थे निवृत्ति के बाद भी काफी खुश रहते थे क्योंकि उनका दिन बड़े आराम से निकल रहा था, शर्मा जी का एक मित्र था मि. वर्मा जी, वह भी सह निवृत कर्मचारी थे एक दिन बाजार में शर्मा जी की मुलाकात वर्मा जी से हो गई दोनों ने एक दूसरे से हाल चाल पुछा और फिर चाय पीने की इच्छा के साथ दोनों बगल की चाय की दुकान पे हो लिए। दोनों सहकर्मियों की वार्ता शुरू हुई और एक दूसरे के जीवन एवं दिन प्रसारण के संदर्भ में चर्चा होने लगी। वर्मा जी ने कहा भाई शर्माजी सेवा निवृति के बाद दिन नहीं निकलता और समय प्रसार नहीं हो रहा सोच रहा हूँ कुछ और करने की किन्तु सेहत भी इतना साथ नहीं दे रही किन्तु आप बताईए - शर्माजी ने बताया कि उनका दिन बड़े आराम से गुजर रहा है, और दिन कैसे निकल जाता है पता ही नहीं पड़ता। वर्मा जी आश्चर्य से पुछा - अरे वाह कैसे ? शर्माजी ने कहा - एक काम करो कल सुबह 11.00 बजे यह सामने जौहरी की दुकान है यहीं पर मिलना तब बताऊँगा कि कैसे दिन निकलता है और फिर दोनों अपने अपने घर चल दिए।

शर्मा जी निर्धारित समय पर अपनी श्रीमती के साथ बाजार पहुँच गए और जौहरी की दुकान के सामने खड़े होकर एक यातायात पुलिस कांस्टेबल से चर्चा कर रहे थे उतने में वर्माजी आ गए।

पुलिस कांस्टेबल - (शर्माजी से) यह गाड़ी नो पार्किंग में लगाया है इसका चालान कटेगा लाईए 2000 रुपये भरिए।

शर्मा जी - पुलिस कांस्टेबल से - सर मैं निवृत कर्मचारी हूँ मैं इतना पैसा नहीं दे पाऊँगा।

पुलिस कांस्टेबल - नहीं आपने गाड़ी नो पार्किंग में लगाया है आपकी गाड़ी जब्त की जाती है।

शर्माजी - अरे सर माफ करिए आगे से ध्यान रखूँगा और गाड़ी सही जगह पार्क करूंगा।

पुलिस कांस्टेबल - ठीक है लाईए 1000/- रुपए चालान नहीं काटूँगा।

श्रीमती शर्माजी - (शर्माजी से)- देखा 1000/- रुपए में मान गया अब गया पैसा इसके जेब में।

पुलिस कांस्टेबल गुस्से में - शर्मा जी से - अब तो चालान कटेगा अब कुछ नहीं हो सकता।

शर्मा जी - पुलिस कांस्टेबल से - अरे सर माफ करिए इसको तो कुछ पता ही नहीं चलता लेकिन सर मेरे पास 100 रुपए है आप ले लीजिए और मान जाईए।

पुलिस कांस्टेबल - नहीं अब तो 1000 से भी बात नहीं बनेगी।

शर्मा जी - पुलिस कांस्टेबल से - अरे सर मान जाईए मैं आपको 500 रुपए दे रहा हूँ सेवानिवृत कर्मचारी हूँ 1000 रुपये नहीं है।

पुलिस कांस्टेबल - अच्छा ठीक है लाइए।

श्रीमती शर्माजी - (शर्माजी से) देखा 500/- रुपए में भी मान गया अरे यह तो 100 में भी मान जाता।

पुलिस कांस्टेबल - (शर्माजी से) - अब तो कोई मौका नहीं है आपके पास आपकी गाड़ी जब्त की जाती है।

इस तरह जैसे ही पुलिस कांस्टेबल मान जाता श्रीमती शर्मा जी कुछ न अटपटा कह देती और पुलिस कांस्टेबल भड़क जाता इस तरह करीब एक घंटे से ज्यादा का समय बीत गया और वर्माजी बगल में खड़े होकर चुपचाप सब देख रहे थे। इतने में पुलिस कांस्टेबल - ने चालान काटा और उस गाड़ी को खींच कर ले जाने लगे। तब शर्माजी ने वर्माजी से कहा चलो मेरे साथ और फिर तीनों सामने पार्किंग में गए और शर्माजी ने स्कूटर में चाबी लगाई और स्कूटर चालू किया वर्माजी जी हैरानी से बोले अरे, आपकी गाड़ी को तो यातायात पुलिस ले गया तब शर्माजी ने कहा अरे वह गाड़ी मेरी नहीं थी मेरी स्कूटर तो यहां पार्क कर रखा था मैं तो सिर्फ टाइम पास कर रहा था।

और इस तरह वर्माजी को शर्माजी के खुश होने का राज बता दिया।

:: संदर्भाधीन अवधि के दौरान गतिविधियों की झलकियाँ ::

गणतंत्र दिवस के अवसर पर राष्ट्रध्वज को सलामी देते हुए
अध्यक्ष श्री एस. के . मेहता,
दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण, कंडला।

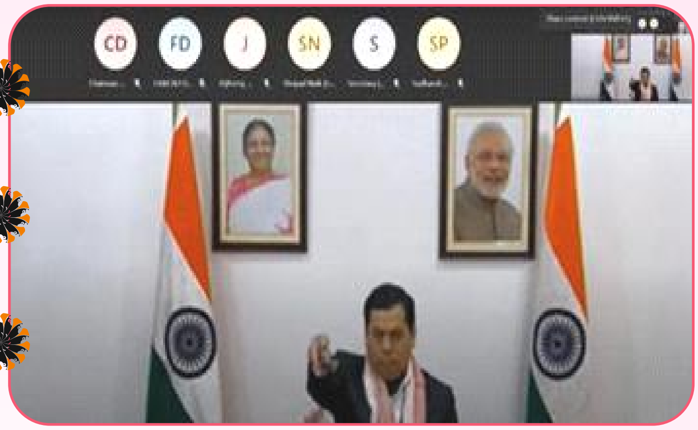

दिनांक 23 जनवरी, 2023 को कंडला में बने ऑयल जेट्टी नं. 7 के उद्घाटन एवं पोर्ट के विकास में महत्वपूर्ण अन्य कई परियोजनाओं का शिलान्यास करते हुए केन्द्रीय पत्तन, पोत परिवहन एवं जलमाग मंत्री श्री सर्बानंद सोनोवाल जी ।

20 जनवरी 2023 को गुजरात स्टार अवार्ड्स के 10 वें संस्करण में 'वर्ष का सर्वश्रेष्ठ पोर्ट (गैर कंटेनरीकृत)' का पुरस्कार ग्रहण करते हुए अध्यक्ष श्री एस.के. मेहता, दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण, कंडला।

राष्ट्रीय समुद्री दिवस 2023 के हीरक जयंती समारोह के अवसर पर संबोधित करते हुए अध्यक्ष श्री एस.के. मेहता
दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण, कंडला।

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष में 10 मार्च 2023 को श्रीमती अमिता मेहता, धर्मपत्नी श्री एस.के.मेहता, अध्यक्ष दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण के स्वागत का सुंदर दृश्य।

दिनांक 4 मार्च 2023 को कच्छ महिला कल्याण केन्द्र, भुज की महिलाओं को ड्रेस सामग्री और सैनिटरी नैपकिन वितरित करते हुए श्रीमती अमिता मेहता जी।

:: संदर्भाधीन अवधि के दौरान गतिविधियों की झलकियाँ ::

दिनांक 24-01-2023 को अध्यक्ष, डीपीए, श्री एस.के.मेहता आई.एफ.एस. की उपस्थिति में तिमाही समीक्षा बैठक का आयोजन चित्र।

हिंदी गृह पत्रिका 'लहरों का राजहंस' के 23वें अंक का विमोचन समिति के सदस्यों की उपस्थिति में अध्यक्ष श्री एस.के. मेहता जी द्वारा विमोचन।

दिनांक 28-03-2023 को दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण में पूर्ण-दिवसीय हिंदी कार्यशाला के आयोजन का दृश्य।

दिनांक 28-03-2023 को हिंदी कार्यशाला के दौरान राजभाषा प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता में विजेता प्रतिभागियों को पुरस्कृत करते हुए वरिष्ठ उप सचिव श्री वाई.के.सिंह।

दिनांक 29-03-2023 को 'हिंदी एवं भारतीय भाषाओं के समन्वय एवं उनका विकास' विष्य पर संगोष्ठी में सहभागी हुए नराकास सदस्य एवं डीपीए कर्मचारीगण।

दिनांक 29-03-2023 को नराकास के तत्वावधान में दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण द्वारा हिंदी संगोष्ठी का उद्घाटन करते हुए उपाध्यक्ष, श्री नंदीश शुक्ल एवं अन्य अधिकारीगण।

:: संदर्भाधीन अवधि के दौरान गतिविधियों की झलकियाँ ::

दिनांक 29-06-2023 को दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण में पूर्ण-दिवसीय हिंदी कार्यशाला के अवसर पर उपाध्यक्ष, श्री नंदीश शुक्ला जी का स्वागत करते हुए श्री सी. हरिचंद्रन, सचिव-डीपीए।

दिनांक 29-06-2023 को दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण में पूर्ण-दिवसीय आयोजित हिंदी कार्यशाला में उपस्थित सभी प्रतिभागियों का समूहचित्र।

दिनांक 03-05-2023 को अध्यक्ष श्री एस.के.मेहता जी की उपस्थिति में आयोजित तिमाही समीक्षा बैठक का चित्र।

दि. 25-01-2023 को दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण द्वारा नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, कंडला/गांधीधाम की अध्यक्ष के दायित्व का निर्वहन करते हुए उपाध्यक्ष की नंदीश शुक्ला जी की अध्यक्षता में आयोजित छमाही बैठक का चित्र।

दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण द्वारा विश्व पर्यावरण दिवस 5 जून 2023 के अवसर पर पौधरोपण करते हुए श्री एस.के. मेहता, आई.एफ.एस., अध्यक्ष एवं अन्य अधिकारीगण।

जनता के बीच जागरूकता फैलाने के लिए प्लास्टिक सफाई अभियान के तहत प्लास्टिक के कचरे को साफ करते हुए अधिकारी एवं कर्मचारीगण।

:: संदर्भाधीन अवधि के दौरान गतिविधियों की झलकियाँ ::

अंतराष्ट्रीय योग दिवस 21 जून 2023 के अवसर पर कार्गो जेट्टी-13 पर खड़े जहाज एम.वी. स्यामी पर योग सागरमाला मनाते हुए डीपीए की महिला अधिकारी एवं महिला कर्मचारीगण।

21 जून 2023 'विश्वयोग दिवस' के अवसर पर योग करते हुए अध्यक्ष एवं उपाध्यक्ष महोदय और अन्य अधिकारी एवं कर्मचारीगण।

दिनांक 14 अप्रैल 2023 को भीमराव आंबेडकर जयंती के अवसर पर अध्यक्ष श्री एस.के. मेहता, आई.एफ.एस. द्वारा पुष्प अर्पण।

श्री नंदीश शुक्ल, उपाध्यक्ष-डीपीए द्वारा टीम-ऑल इंडिया मेजर पोर्ट शटल बैडमिंटन चैम्पियनशिप 2023 को जीत की बधाई देते समूहचित्र (हल्दिया डॉक कॉम्प्लेक्स में दिनांक 3 से 6 फरवरी 2023 तक आयोजित)

दिनांक 03-01-2023 को, दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण, कंडला द्वारा 'आजादी का अमृत महोत्सव' के तहत निबंध लेखन प्रतियोगिता का आयोजन चित्र।

दिनांक 04-01-2023 को, दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण, कंडला द्वारा 'आजादी का अमृत महोत्सव' के तहत गायन प्रतियोगिता का आयोजन चित्र।

गाते रहिए

सुश्री ईला वेदान्त
वरिष्ठ लिपिक
सिविल अभियांत्रिकी विभाग

"गाओ मेरे मन चाहे सूरज चमके चाहे लगा हो ग्रहण"

जी, हाँ, गुनगुनाना किसे पसंद नहीं होता ? हां, खुलकर सबके सामने न सही लेकिन अकेले में या बाथरूम में हर कोई गुनगुनाता ही है। कई लोग गाते भी हैं। ऐसा करने से मन को अच्छा लगता है, साथ ही कई शारीरिक समस्याएं भी दूर होती हैं। शब्दों का साफ़ उच्चारण, खर्राटों से राहत और न जाने कितने ही फ़ायदे हैं जो गाने और गुनगुनाने से मिलते है। आज इन्हीं फ़ायदों के बारे में हम आपसे चर्चा करेंगे।

आप खुलकर गाते हैं तो मन वैसे ही खुश रहता है। जब आप एक समूह में गाते हैं, चाहे वह एक बड़ा समूह हो या फिर छोटा, तो सामूहिक गायन से शरीर में एंडोर्फिन हॉर्मोन रिलीज़ होता है, जिसे 'फील-गुड' हॉर्मोन भी कहते हैं। ये हॉर्मोन सकारात्मक भावनाओं को बढ़ावा देने में मदद करता है। गायन प्रतिरक्षा प्रणाली को दुरस्त रखने के साथ ही बीमारियों से लडने में भी मदद करता है। संगीत सुनना तनाव के हॉर्मोन को कम करता है लेकिन शरीर की प्रतिरक्षा प्रणाली को मज़बूत बनाने के लिए खुलकर गाना जरूरी है। गाना गाने से इम्युनोग्लोबुलिन नामक एंटीबॉडी बनती है जो शरीर को संक्रमण से बचाने में मदद करती है।

नियमित गायन सांस लेने की प्रक्रिया को सुधार सकता है, शोधकर्ताओं ने इस बात की पुष्टि की है। खर्राटे लेने वाले व्यक्तियों के दो समूहों पर हुए इस शोध में, एक समूह गाना गाने वाला था और दूसरा कभी-कभी गाने वाला व गाना न गाने वाला था। शोधकर्ताओं ने पाया कि कम गाना गाने वालों ने खर्राटे लिए जबकि जो गाते थे उन्होंने खर्राटे नहीं लिए।

कई अध्ययनों से यह भी पता चला है कि जो लोग बांसुरी जैसा कोई वायु वाद्य यंत्र बजाते हैं वे भी सामान्य लोगों की तुलना में कम खर्राटे लेते हैं। अल्ज़ाइमर और डिमेंशिया से ग्रस्त लोग धीरे-धीरे याद्दाश्त कम होने का अनुभव करते हैं। इन समस्याओं से ग्रस्त लोग गाने के बोल, दूसरे शब्दों की तुलना में अधिक आसानी से याद करने में सक्षम होते हैं। इसीलिए माना जाता है कि जो लोग गाना गाते है या संगीत प्रेमी होते हैं उनकी याद्दाश्त अच्छी बनी रहती है। गाना गाने के दौरान कई शब्दों को ऊंचा तो कई को धीमा बोला जाता है। साथ ही कई नए शब्द भी सीखने को मिलते हैं। इस तरह के उच्चारण से ज़बान साफ़ होती है और शब्द भी साफ़ निकलते हैं। बचपन से गाना गाने वाले बच्चे, कठिन शब्दों को बड़ो की तुलना में अधिक साफ़ बोल पाते हैं।

जब हम दूसरों के साथ मिलकर गाते हैं, तो एक अपनापन, एकता व जुड़ाव महसूस होता है। ठीक वैसे ही जैसे साथ खेलने वाले खिलाड़ी अनुभव करते हैं। बच्चों को उनके दोस्तों के साथ गाना गाने के लिए प्रेरित करें, ताकि वे भी सामाजिक रूप से लोगों से जुड़ सकें।

गाने गाते हुए गहरी सांस लेना और छोड़ना सामान्य है। ऐसा करना फेफड़ो के स्वास्थ्य के लिए फ़ायदेमंद होता है। इससे फेफड़ो से संबंधित रोगों की आशंका भी कम होती है। गायन से रक्त में ऑक्सीजन की मात्रा भी बढ़ती है, जो सेहत के लिए लाभदायक है।

संगीत हमारी भावनाओं पर प्रभाव डालता है और समग्र मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य में सुधार करता है। विभिन्न शोधों के अनुसार, संगीत (लगभग 60 बीट्स प्रति मिनट) हमारे मस्तिष्क को संगीत की लय के साथ जोड़ सकता है और अल्फ़ा ब्रेनवेव्स की रिहाई को प्रेरित कर सकता है, जो हमें आराम करने और नींद लाने में मदद करता है।

शांतिदायक संगीत सुनने से दवाओं की तरह ही हमारे मस्तिष्क की कार्यप्रणाली में बदलाव आता है। तेज़ संगीत हमारी सर्तकता और एकाग्रता के स्तर को बढ़ाता है। संगीत हमारे मस्तिष्क को हमारे शरीर में डोपामाइन (एक अच्छा महसूस कराने वाला हॉर्मोन) जारी करने के लिए उत्तेजित करता है। हमारे शरीर में डोपामाइन हार्मोन का अच्छा स्तर हमें खुश, संतुष्ट, ऊर्जावान और

प्रेरित महसूस करा सकता है। यह हमारे शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक स्वास्थ्य और कल्याण को बेहतर बनाने में भी मदद करता है।

तनाव से राहत के लिए संगीत एक शक्तिशाली उपकरण हो सकता है, क्योंकि जब संगीत बजता है, तो हमारा दिमाग संगीत के साथ तालमेल बिठा लेता है, और हम अन्य अवसादग्रस्त विचारों से दूर हो जाते हैं। अन्य चिकित्सीय तरीकों के साथ संगीत चिकित्सा अवसाद, चिंता और अन्य मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं वाले लोगों के लिए फायदेमंद है।

तनाव दूर करने के लिए संगीत एक प्रभावी उपकरण है और यह कई डिजिटल प्लेटफार्मों पर व्यापक रूप से उपलब्ध है। हम इसका उपयोग नियमित गतिविधियों को करते समय बिना अतिरिक्त समय बर्बाद किए कर सकते हैं। जो लोग संगीत सुनते हैं वे अपने दैनिक गतिविधियों में अधिक आनंद पाते हैं और तनाव को अधिक प्रभावी ढंग से संभालते हैं। तनाव कम करने के लिए संगीत का कई तरह से उपयोग कर सकते हैं।

अतः आईए, गाईए और आनंद में रहिए।

खुशी से जियो

श्री के. नेताजी
सी.जी. खलासी
(दिहाड़ी कर्मचारी)
सामान्य प्रशासन विभाग

जोर से फुसफुसाओ, लेकिन चुपचाप कहो,
आनंद से गाओ, लेकिन प्रार्थना चुपचाप करो।

तेजी से चलो, लेकिन धीरे-धीरे बात करो,
बहुत ज्यादा खर्च करो, लेकिन धीरे-धीरे करो।

किसी से बैर न करो, पर प्रेम स्पष्ट रूप से करो,
आदर बहुत करो, परंतु आज्ञा प्रसन्नतापूर्वक मानो।

शब्दो का उच्चारण करों, लेकिन बहुत ही आनंद से,
खूब काम करो, लेकिन शांति से आराम करो।

खूब बातें करो, लेकिन सच्ची बातें करो,
चाहे ध्यान भटकाओ, लेकिन ध्यान से सुनों।

कड़ी मेहनत करो, लेकिन शांति से
गर्व करें, लेकिन सीमित रूप से।

शांत रहो, लेकिन चेहरा चमकदार रखो,
दुखी रहो, लेकिन खुशी से जियो।

विविधता और एकता हमारे देश की पहचान

श्री प्रतीक नरेश भावनानी
सुपुत्र ज्योति एन. भावनानी
प्रधान लिपिक,
सामान्य प्रशासन विभाग।

विविधता में एकता ही तो,
मेरे भारत की पहचान है।
विविध भाषाओं से परिपूर्ण,
मेरा भारत बेहद ही महान है।

दूर-दूर तक फैली जिसकी,
दुनिया भर में बहुत ही शान है।
ऐसे मेरे भारत देश पर मुझको,
खूब-खूब अभिमान हैं।

सचमुच, मेरा भारत विविधता से भरा ऐसा सुंदर देश है जहाँ पर न जाने कितने ही धर्मों और जातियों के लोग रहते हैं, जिनकी विविध विविध भाषाएं हैं, भिन्न-भिन्न वेशभूषाएं है और अपनी-अपनी संस्कृति व रीति रिवाज है। कितने ही धर्मों के लोग जैसे कि हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई, बौद्ध, जैन तथा पारसी इत्यादि भारत में रहते है जो आपस में मिलजुलकर रहते हैं तथा इक दूजे के धर्मों का दिल से बहुत ही सन्मान करते हैं। वे आपस में भाईचारा रखकर एक-दूसरे के त्योंहारो में खुशी-खुशी शरीक होते है और मिलकर देश की प्रगति में अपना हाथ बँटाते है। इतिहास भी इस बात का गवाह हैं कि जब-जब देश पर कोई संकट आया है तब-तब लोगों ने बिना किसी जाति, धर्म और भाषा के भेद के देश पर आई विपदा के समय में अपना सम्पूर्ण सहयोग दिया है। आजादी की लड़ाई इस बात का बहुत ही बड़ा प्रमाण है, जिसमें कितने ही धर्मों और भाषाओं के लोगों ने बिना किसी जातिभेद के अपनी मातृभूमि की रक्षा हेतु अपने प्राणों की बाजी लगा दी थी। इसके अलावा कोरोना काल के दौरान भी हमारे भारतवासियोंने बिना किसी भेदभाव के मानवता का जो धर्म निभाया है और महामारी के इतने कठिन दौर में भी एक दूसरे को संभालकर अपनी एकता का सबूत दिया है वह काबिले तारीफ है।

एकता के मजबूत सूत्र में बँधी ऐसी विविध भारतीय भाषाओं की बात अगर की जाए तो उत्तर तथा मध्य भारत में जहाँ पर अधिकतर हिन्दी तथा उर्दू भाषाएँ बोली जाती है वहीं पर दक्षिण भारत में कन्नड, तेलुगू, मलयालम तथा तमिल भाषाएँ बहुधा बोली जाती है। पश्चिम भारत में गुजराती, राजस्थानी, पंजाबी तथा हरियाणवी भाषाओं का अधिक बोलबोला है। इसी तरह से पूर्व गुजरात की अपनी भाषाएँ है।

यूँ तो भारत में अनेक भाषाएँ बोली जाती है परंतु जो भाषाएँ अधिकतर बोली जाती है ऐसी 121 भारतीय भाषाओं में से 22 भाषाओं को संविधान में मान्यता प्राप्त हैं। वे हिन्दी, बंगाली, असमिया, बोडो, डोंगरी, गुजराती, तमिल, तेलुगू, उर्दू, सिंधी, संथाली, संस्कृत, पंजाबी, ओरिया, नेपाली, मराठी, मणिपुरी, मलयालम, मैथिली, कश्मीरी, कन्नड़ एवं कोंकिणी है। इन्हीं में से केवल हिन्दी भाषा की अट्ठारह उपभाषाएँ जैसे कि अवधि, ब्रजभाषा, कन्नौजी, बुंदेली, बघेली, हड़ौती, भोजपुरी, हरयाणवी, राजस्थानी, छत्तीसगढ़ी, मालवी, नागपुरी, मैथिली, खोरठा, पंचपरगनिया, कमाउनी तथा मगही है, जो देवनागरी लिपि में लिखी जाती है।

आज के आधुनिक युग में जहाँ पर एक तरफ हमारी मातृभाषाएँ शिक्षा के क्षेत्र से विलीन-सी होती जा रही है, वहीं पर अब लोगों में अपनी मातृभाषा के प्रति फिर से जागरुकता नज़र आ रही है। आज वेबीनार पर, व्हाट्सएप पर, इंस्टाग्राम पर तथा फेसबुक पर विभिन्न कार्यक्रम आयोजित करके अपनी मातृभाषओं को बचाने की कोशिश में पूरा भारत एक जुट होकर अपनी एकता और जागरुकता का प्रमाण सारी दुनिया के आगे पेश कर रहा है। ये सिलसिला अगर बिना रुके अपनी मातृभाषओं की ओर यूं ही निरंतर बढ़ता रहा, तो वो दिन दूर नहीं जब हमारी मातृभाषाओं को अपना खोया हुआ सम्मान फिर से प्राप्त हो जाएगा और हमारे देश की पहचान, जो सदियों से चली आ रही है, वो यूं ही हमेशा बरकरार रहेगी।

अंत में कुछ पंक्तियाँ अपनी मातृभाषाओं के नाम करता हूँः

मिलकर यूँ ही जो हम साथ चलेंगे, मंज़िल अपनी हम जरूर पाएँगे,
अपनी मातृभाषाओं को हम इक दिन, फिर से इंसाफ जरूर दिला पाएँगे।

जय भारत।

पथिक

श्रीमती ज्योति एन. भावनानी
सहायक
सामान्य प्रशासन विभाग

ये दुनिया मुसाफिरखाना है,
पथिकों का आना जाना है।
कुछ दिनों का यहाँ ठिकाना है,
ऐ पथिक! इक दिन तो यहाँ से जाना है।

किस बात का तुझे इतना अभिमान है,
माटी का तू तो इक पुतला है।
तेरे रंग रूप और काया को,
ऐ पथिक! माटी में इक दिन मिल जाना है।

कुछ साथ तुझे नहीं ले जाना है,
खाली हाथ तुझे इस जग से जाना है।
सब कुछ तुझे यहीं छोड़ जाना है,
ऐ पथिक! एक कफन में ही तुझे यहाँ से जाना है।

कितनों से मुँह तूने मोड़ा है,
अपनों का दिल तूने तोड़ा है।
इस बात को तू बिल्कुल भूल गया,
ऐ पथिक! इन्हीं के कंधे पे इस जग से तुझे जाना है।

झूठी दौलत तूने कमाई है,
झूठी शोहरत तूने यहाँ पाई है।
तूने की जो पाप की कमाई है,
ऐ पथिक ! उसे यहीं रह जाना है।

जो जग में तेरे अपने है,
जिनसे सजाए तूने सपने है।
किसी को साथ न तेरे संग चलना है,
ऐ पथिक! अकेले ही तुझे यहाँ से जाना है।

ईश्वर का नाम ही एक सच्चा है,
जिसको ही तूने भूलाया है।
इस जीवन के कंधो से,
ऐ पथिक! उसे ही तुझे बचाना है।

छोड़ मोह माया और धन दौलत,
कर ईश्वर के नाम का तू स्मरण।
इस भवसागर रूपी दुनिया से,
ऐ पथिक! उसको ही तुझे पार लगाना है।

इस भवसागर रूपी दुनिया से,
ऐ पथिक, उसको ही तुझे पार लगाना है।

प्रदूषण

श्री भावेश बचवानी
सुपुत्र श्री हरीश बचवानी
वरिष्ठ लिपिक
वित्त विभाग

प्रदूषण एक ऐसी समस्या है जो हमारे पर्यावरण और स्वास्थ्य के लिए गंभीर खतरा पैदा कर रही है। प्रदूषण वायु, जल और मिट्टी में मिले हुए विषात्क पदार्थों की मात्रा बढ़ने के कारण होता है। यह विभिन्न प्रकार का प्रदूषण जैसे वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण, भूमि प्रदूषण, प्लास्टिक प्रदूषण आदि के रूप में प्रकट होता है।

वायु प्रदूषण एक बड़ी समस्या है जिसके कारण हमारे आसपास की हवा अनुपयुक्त हो जाती है। यह कारगर प्रदूषण तत्व जैसे कि कारों के धुएं, औद्योगिक कारखानों से निकले वायुमंडलीय गैसें, और धूल के कारण होता है। इससे निकले वायुमंडलीय गैसें हमारे स्वास्थ्य को प्रभावित करके अस्थमा, एलर्जी, दिमागी कमजोरी और फेफड़ो के रोग जैसी समस्याएं पैदा करती हैं।

जल प्रदूषण के कारण पानी प्रदूषित हो जाता है जिससे पीने का पानी अनुपयुक्त हो जाता है और इससे विभिन्न जल संसाधनों पर बुरा प्रभाव पड़ता है। जल प्रदूषण के कारण पानी में हुए विषाक्त पदार्थ भी हमारे स्वास्थ्य को खतरा पहुंचाते हैं।

प्रदूषण को रोकने के लिए हमें जागरूक होना चाहिए। हमें साफ हवा को बनाए रखने के लिए वाहनों में प्रदूषण नियंत्रण उपकरणों का उपयोग करना चाहिए। इसके अलावा, ध्वनि प्रदूषण कम करने, जल संचय और जल सफाई के लिए संजाल के इस्तेमाल को बढ़ावा देना चाहिए। हमें प्लास्टिक का उपयोग कम करना चाहिए और उसकी वैकल्पिक वस्तुओं का उपयोग करना चाहिए।

प्रदूषण एक गंभीर समस्या है जिसे हमें जल्दी हल करना चाहिए। हमें अपने आसपास के पर्यावरण का ध्यान रखना और इसे सुरक्षित बनाने के लिए सहयोग करना चाहिए। यह सिर्फ हमारे स्वास्थ्य को ही नहीं, बल्कि हमारे भविष्य को भी प्रभावित करता है।

प्रकृति द्वारा निर्मित वस्तुओं के अवशेष को जब मानव निर्मित वस्तुओं के अवशेष के साथ मिला दिया जाता है तब दूषक पदार्थों का निर्माण होता है। दूषक पदार्थों का पुनर्चक्रण नहीं किया जा सकता है।

किसी भी कार्य को पूर्ण करने के पश्चात् अवशेंषो को पृथक रखने से इनका पुनःचक्रण वस्तु का वस्तु एवम् उर्जा में किया जाता है।

पृथ्वी का वातावरण स्तरीय है। पृथ्वी के नज़दीक लगभग 50 किमी ऊँचाई पर स्ट्रेटोस्फीयर है जिसमें ओजोन स्तर होता है। यह स्तर सूर्यप्रकाश की पराबैगनी (UV) किरणों को शोषित कर उसे पृथ्वी तक पहुँचने से रोकता है। आज ओजोन स्तर का तेजी से विघज्ञन हो रहा है, वातावरण में स्थित क्लोरोफ्लोरो कार्बन (CFC) गैस के कारण ओजोन स्तर का विघटन हो रहा है।

यह सर्वप्रथम (1980) के वर्ष में नोट किया गया की ओजोन स्तर का विघटन सम्पूर्ण पृथ्वी के चारों ओर हो रहा है। दक्षिण ध्रुव विस्तारों में ओजोन स्तर का विघटन 40%-50% हुआ है। इस विशाल घटना को ओजोन छिद्र (ओजोन होल) कहतें है। मानव आवास वाले विस्तारों में भी ओजोन छिद्रों के फैलने की संभावना हो सकता है।

ओजोन स्तर के घटने के कारण ध्रुवीय प्रदेशों पर जमा बर्फ पिघलने लगी है तथा मानव को अनेक प्रकार के चर्म रोगों का सामना करना पड़ रहा है। ये रेफ्रिजरेटर और एयरकण्डीशनर में से उपयोग में होने वाले फ्रियोन और (क्लोरोफ्लोरो कार्बन) गैस के कारण उत्पन्न हो रही समस्या है। आज हमारा वातावरण दूषित हो गया है। वाहनों का फैक्ट्रियों से निकलने वाले गैसों के कारण हवा (वायु) प्रदुषित होती है। यह सच है कि पर्यावरण मानव कृतियों से निकलने वाले कचरे को नदियों में छोड़ा जाता है, जिससे जल प्रदूषण होता है। लोगों द्वारा बनाये गये अवशेष को पृथक न करने के कारण बने कचरे को फेंके जाने से भूमि (जमीन) प्रदूषण होता है। प्रदुषण कई प्रकार के होते हैं :- (1) जल प्रदुषण (2) वायु प्रदुषण (3) ध्वनि प्रदुषण (4) मृदा प्रदुषण आदि।

जीव मण्डल का आधार वायु है। वायु में उपस्थित ऑक्सीजन पर ही जीवन निर्भर है। प्राणी वायुमण्डल से ऑक्सीजन ग्रहण करते है और कार्बन-डाई-ऑक्साइड निष्कासित करते हैं, जिसे हर पौधे ग्रहण कर लेते हैं और एक संतुलित चक्र चलता रहता है।

किंतु इस संतुलन में उस समय रुकावट आ जाती है जब उद्योगों, वाहनों एवं अन्य घरेलू उपयोगों से निकलता धुआँ एवं अन्य सूक्ष्मकण, विभिन्न प्रकार के रसायनों से उत्पन्न विषैली गैस, धूल के कण, रेडियोधर्मी पदार्थ आदि वायु में प्रवेश करके, स्वास्थ्य के लिये ही नही अपितु समस्त जीव-जगत के लिए हानिकारक बना देते हैं। यही वायु प्रदुषण या वायु मण्डलीय प्रदुषण कहलाता है।

वायु प्रदुषण उसी समय प्रारंभ होता है जब वायु में अवांछित तत्व एवं गैस आदि समाविष्ट हो जाते हैं, जिससे उसका प्राकृतिक स्वरुप विनष्ट हो जाता है और उससे हानि होने की संभावना अधिक हो जाती है।

वैसे तो वायु प्रदूषण की समस्या कोई नई नहीं है क्योंकि अनेक प्राकृतिक कारणों जैसे ज्वालामुखी का विस्फोट, तेज हवाओं से मिट्टी के कणों का वायु में मिलना या जंगल की आग से प्राचीन काल से वायु प्रदूषण होता आ रहा है।

जब से मानव ने आग का प्रयोग प्रारम्भ किया, तभी से प्रदूषण का प्रारम्भ हो गया, पशु चारण से उड़ने वाली रेत, खनन से प्रदूषित वायु मण्डल या गन्दगी से सूक्ष्म जीवाणुओं का वायु में फैल जाना प्राचीन काल से होता रहा है। किन्तु तब तक यह समस्या नहीं थी, क्योंकि जनसंख्या सीमित थी, आवश्यकताएँ कम थीं, इंधन का उपयोग बहुत कम किया जाता था, प्राकृतिक वनों का पर्याप्त विस्तार था जिसके कारण प्रदूषित पदार्थ पर्यावरण से अपने-आप ही नष्ट हो जाते थे, उनसे किसी प्रकार की हानि नहीं होती थी,

क्योंकि वायुमण्डलीय प्रक्रिया में स्वतः ही शुद्ध एवं सन्तुलित होने की अपूर्व क्षमता होती है। किन्तु आज की औद्योगिक, वैज्ञानिक एवं तकनीकी प्रगति ने इस गणित को गलत कर दिया है, क्योंकि मानव तीव्र गति से वायु मण्डल में अवशिष्ट पदार्थ विस्तारित करने लगा है। जो वायु प्रदूषण का मूल कारण है।

(1) वायु प्रदूषण के प्राकृतिक स्रोत :

- कुछ प्राकृतिक क्रियाओं के फलस्वरुप भी वायु प्रदूषण होता है, यद्यापि यह सीमित एवं क्षेत्रीय होता है। इसमें ज्वालामुखी का उद्धार एक प्रमुख प्राकृतिक क्रिया है, जिससे विस्फोट के क्षेत्र का वायु मण्डल प्रदूषित हो जाता है।
- ज्वालामुखी उद्धार के समय विशाल मात्रा में धुआँ, राख एवं चट्टानों के टुकड़े तथा विभिन्न प्रकार की गैसें तीव्र गति से वायु मण्डल में प्रवेश करती है और वहाँ प्रदूषण में वृद्धि हो जाती है।
- वनों में लगने वाली आग (जो कभी-कभी हजारों वर्ग किलोमीटर में फैल जाती है) भी वायु प्रदूषण का कारण बनती है क्योंकि इससे धुआँ और राख के कण विस्तीर्ण हो जाते हैं।
- तेज हवाओं एवं आंधी-तूफान से जो धूल के कण वायु मण्डल में फैलते है, वे प्रदूषण के कारण बनते हैं।
- समुद्री लवण के कण, खनिजों के कण भी वायु प्रदूषण में योग देते हैं।
- दलदली प्रदेश में पदार्थो के सड़ने से 'मिथेन गैस' प्रदूषण फैलाती है।
- कुछ पौधों से उत्पन्न हाइडोजन के यौगिक तथा पराग कण भी प्रदूषण का कारण है।
- कोहरा प्रदूषण का एक प्रमुख कारण बनता है।

प्राकृतिक स्रोतों से होने वाला वायु प्रदूषण सीमित एवं कम हानिकारक होता है क्योंकि प्रकृति स्वयं विभिन्न क्रियाओं से इसमें संतुलन बनाए रखती है।

(2) वायु प्रदूषण के मानवीय स्रोत :-

यह कहना बिल्कुल भी गलत नहीं होगा कि मानव ने अपनी विभिन्न क्रियाओं से वायु मण्डल या वायु को अत्यधिक प्रदूषित किया है और करता जा रहा है। ऊर्जा के विविध उपयोग, उद्योग, परिवहन, रसायनों के प्रयोग में वृद्धि आदि ने जहाँ मानव को अनेक सुविधाऐं प्रदान की हैं, वहीं वायु प्रदूषण के रूप में संकट को भी जन्म दिया है।

- नियमित घरेलू कार्य जैसे भोजन बनाने, पानी गर्म करने आदि में ईधन, जैसे-लकड़ी, कोयला, गोबर के कण्डे, मिट्टी का तेल, गैस आदि का प्रयोग होता है। इस जलाने की क्रिया में कार्बन-डाई-ऑक्साइड, कार्बन-मोनो-ऑक्साइड, सल्फर-डाई-ऑक्साइड आदि गैसें उत्पन्न होती हैं जो वायु को प्रदूषित करती हैं।
- वर्तमान युग में परिवहन के क्षेत्र में अत्याधिक प्रगति हुई है, इससे आज जहाँ दूरियाँ सिमट कर रह गई हैं वहीं वायु प्रदूषण का संकट दिन-प्रतिदिन गहराया जा रहा है।

- समस्त ऊर्जा चालित वाहनों में आंतरिक दहन से शक्ति प्राप्त होती है और साथ में धुआँ निकलता है जो विषैली गैसों एवं हानिकारक प्रदूषण तत्वों से युक्त होता है। इनसे निकले धुएँ में हानिकारक कार्बन मोनो ऑक्साइड और सीसे के कण भी होते हैं जो वायु प्रदूषण में वृद्धि करते हैं।
- धूम कुहरे का जन्म भी पेट्रोल एवं डीजल से निकले नाइट्रोजन के ऑक्सीजन से होता है जो सूर्य के प्रकाश में हाइड्रो कार्बन से क्रिया कर घातक प्रकाश रासायणिक धूम कुहरे को जन्म लेता है।
- विकसित देशों की तुलना में हमारे देश में वाहनों की संख्या कम है किंतु वायु प्रदूषण कम नहीं क्योंकि यहाँ के वाहनों के इंजन पुराने होते हैं, उनका रख-रखाव ठीक नहीं होता और सामान्य वाहन वाले उनसे होने वाले पर्यावरण प्रदूषण के प्रति उदासीन हैं।
- जहाँ कोयले को जला कर ताप ऊर्जा प्राप्त की जाती है वहाँ वायु प्रदूषण का खतरा अधिक हो जाता है क्योंकि इस प्रक्रिया में अत्याधिक कोयला जलाया जाता है। फलस्वरूप प्रदूषण फैलाने वाली गैसें जैसे सल्फर-डाई-ऑक्साइड, कार्बन के ऑक्साइड तो वायुमण्डल में फैलती ही हैं, इसके अतिरिक्त कोयले की राख एवं कार्बन के सूक्ष्म कण इसके चारों ओर से वायु मण्डल में फैल जाते हैं।
- वायु प्रदूषण के लिए जहाँ एक ओर परिवहन उत्तरदायी है तो दूसरी ओर उद्योग। वास्तविक रूप से वायु प्रदूषण औद्योगिक क्रांति की देन है। उद्योगों में एक ओर दहन क्यिा होती है तो दूसरी ओर विविध पदार्थों का धुआँ जो औद्योगिक चिमनियों से निकलकर वायु मण्डल में विलीन हो जाता है तथा जिसका परिणाम वायु प्रदूषण होता है।
- उद्योगों के कारण लॉस एंजिल्स शहर पर सदैव धुएँ का बादल छाया रहता है। जापान में वायु प्रदूषण अधिक होता है तो बच्चों को स्कूल जाते समय मुंह पर जाली पहना दी जाती है। भारत में यद्यपि उद्योगों द्वारा वायु प्रदूषण औद्योगिक देशों की तुलना में कम है किंतु कुछ नगरों में जहाँ पर्याप्त उद्योग हैं, इसका स्तर स्वास्थ्य को खतरा पैदा कर रहा है।
- इसी प्रकार अम्लीय वर्षा भी वायु प्रदूषण का एक खतरनाक प्रकार है। अम्लीय वर्षा तब होती है जब सल्फर-डाई-ऑक्साइड वायु में पहुँचकर सल्फ्यूरिक एसिड बन जाता है जो सूक्ष्म कणों के रूप में गिरता है जिसमें सल्फेट आयन अधिक होता है। इस प्रकार का जल मानव एवं वनस्पति दोनों के लिए हानिकारक होता है।
- वर्तमान समय में कृषि की प्रक्रिया से भी वायु प्रदूषण होने लगा है। यह प्रदूषण कीटनाशक दवाओं के अत्यधिक प्रयोग से हो रहा है।

(1) जैसे-जैसे पृथ्वी के वातावरण में कार्बन डाइऑक्साइड की मात्रा बढ़ती जा रही है, उसके कारण पृथ्वी की रक्षा करने वाली ओजोन परत पतली होती जा रही है। जिसके कारण सूची से आने वाली हानिकारक किरणें सीधी हमारे ऊपर पड़ती है, जिससे त्वचा का कैंसर जैसी बीमारियाँ हो रही है।

(2) हवा के प्रदूषित होने के कारण अस्थमा, दमा, कैंसर, सिर दर्द, पेट की बीमारियां, एलर्जी, दिल की बीमारी हो सकती है, जो कि हमारे स्वास्थ्य के लिए बहुत ज्यादा हानिकारक है। इन बीमारियों के कारण प्रतिदिन कई लोगों की मृत्यु हो जाती है।

(3) हमारे वातावरण में ऑक्सीजन की मात्रा 24% थी लेकिन धीरे-धीरे इसकी मात्रा कम होती जा रही है एक रिसर्च के अनुसार हमारे वातावरण में अभी ऑक्सीजन की मात्रा 22% ही रह गई है।

(4) स्वच्छ हवा और ऑक्सीजन की कमी के कारण असमय जीव-जंतुओ की मृत्यु हो रही है और साथ ही कुछ प्रजातियां तो विलुप्त भी हो गई है। अगर ऐसे ही वायु प्रदूषण होता रहा तो एक दिन सभी जीव-जंतु की प्रजातियाँ विलुप्त हो जाएँगी।

(5) वायु में प्रदूषण की मात्रा अधिक होने के कारण पृथ्वी का संतुलन भी बिगड़ रहा है। आए दिन कोई ना कोई आपदा आती रहती है, इसका कारण प्रदूषण ही है अगर हमें हमारे वातावरण को बचाना है, तो वायु प्रदूषण को कम करना होगा।

(6) वायु प्रदूषण के कारण शुद्ध हवा में कई प्रकार की हानिकारक पदार्थ ऐसे भी मिल जाते हैं, जिससे अम्लीय वर्षा होती है। जिस को आम भाषा में हम तेजाब वर्षा भी कहते हैं। यह पानी में घुलने कारण सीधे हमारे शरीर में चली जाती हैं जिससे कई प्रकार की बीमारियाँ हो जाती है।

(7) वायु प्रदूषण के कारण पृथ्वी के वातावरण दिन प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है।

लोकतंत्र

श्रीमती ज्योति एन. भावनानी
प्रधान लिपिक
सामान्य प्रशासन विभाग

लोकतंत्र हमको मिला है,
जैसे कोई हो एक वरदान।
इसमें तो शामिल है कितने ही,
वीर शहीदों का बलिदान।

वर्षों तक अपना ये भारत,
अंग्रेजो की हुकूमत का था गुलाम।
उनकी यातनाओं और उनके कितने,
जुल्मों का बना था वो शिकार।

देश के वीर शहीदों का था केवल,
एक ही जुनून सिर पे ये सवार,
आजादी तो हर हाल में लेंगे,
चाहे न्यौछावर हों जाएं प्राण।

उनकी मेहनत और लगन से ही तो,
मिली हमको गुलामी से निजात।
खुद को मिटाकर भी दी हमको,
उन्होंने लोकतंत्र की प्यारी सौगात।

पर बदले में हम सभी ने उनके,
कुचल ढाले है सारे ही अरमान।
लोकतंत्र में खुद अपने हाथों से,
बदल डाला है हमने इतिहास।

जात-पात और धर्म के नाम पर,
किये हैं हर जगह कत्लेआम।
लड़ाई, झगड़े करके हमने,
घटाया है खुद ही खुद का मान।

लालच की गिरफ्त में आकर,
किया है सच्चाई का व्यापार।
देश को धोखा देकर हमने,
बढ़ाया हे हर जगह भ्रष्टाचार।

अपनी ही सार्वजनिक संपति का हमने,
अपने ही हाथों से किया है हमेशा नुकसान।
गैरों से मिलके अपने ही लोगों पे,
किये हैं हमने अत्याचार और वार।
विदेशी भाषाओं, वेशभूषाओं और रस्मों को,
अपना कर दिया है, हमने उनको बेहद मान।
अपनी भाषाओं, वेशभूषाओं और रस्मों को,
भुलाकर किया है हमने उनका अपमान।

आखिर कब हम स्वदेशी की राह पे चलेंगे,
और कब करेंगे अपने लोकतंत्र पे हम अभिमान?
कब अपने लोकतंत्र के लोगों को अपना समझेंगे,
और करेंगे हम अपने ही लोगों का सन्मान।

आखिर कब अपनी आपसी एकता से,
खुद के लोकतंत्र को बनाएगें फौलाद।
आखिर कब अपने शहीदं के सपनों को,
करेगें हम सब मिलकर के साकार।

आखिर कब होगा लोकतंत्र में,
समाज की बुराईयों का नाश।
आखिर कब होगा लोगों के सर पे,
सच्चाई और ईमानदारी का ताज।

जिस दिन होगा लोकतंत्र में,
मन से निज हित का त्याग,
असल में उसी दिन से ही होगा,
हमारा लोकतंत्र हर विवाद से आज़ाद।

तभी से ही भारत देश में होगा,
हरतरफ केवल शांति का राज।
तभी से ही हमारे लोकतंत्र में होगा,
भारत का गरीब लोक भी आबाद।

मेरे सपनों का भारत

श्री निखिल बचवानी
सुपुत्र श्री हरीश बचवानी
वरिष्ठ लिपिक
वित्त विभाग

मेरे सपनों का भारत तो वह भारत है जिसमें गांधीजी के रामराज्य का आदर्श होगा। वह ऐसा भारत है जिसके लिए हमारे देश के शहीदों ने अपने अनमोल प्राणों की बलि बढ़ा दी थी। मेरे सपनों के भारत में 'स्वराज्य' ही नहीं, बल्कि 'सुराज्य' भी होगा।

मेरी कल्पना का भारत सब तरह से एक फलता-फूलता देश होगा। गाँवों में किसान अपनी भूमि के मालिक होंगे। उनके खेतों में हरियाली और उनके जीवन में खुशहाली होगी। शहरों में उद्योग-धंधे फलते-फूलते होंगे। मिलों-कारखानों में प्रसन्नता से काम करते हुए मजदूर देश को समृद्ध बनाने में जुटे होंगे। देश में न किसी के सामने बेकारी का प्रश्न होगा और न भूख किसी भी मृत्यु का कारण बनेगी। सबके तन पर कपड़ा होगा और सबके दिल में खुशी होगी।

मेरे सपनों के भारत में छोटे से छोटे गाँव में भी प्राथमिक पाठशाला होगी। बड़े गाँवों में विद्यालय और कस्बों में महाविद्यालय ज्ञान-विज्ञान का प्रकाश फैलाते होंगे। जगह-जगह पुस्तकालयों और वाचनालयों की स्थापना होगी। उच्च शिक्षा के द्वार सबके लिए खुले होंगे। शिक्षण में औद्योगिक और तांत्रिकी विषयों का महत्वपूर्ण स्थान दिया जाएगा। हमारे विद्यालय सरस्वती के सच्चे मंदिर होंगे।

मेरे सपनों के भारत में रोगों को लोगों के जीवन पर हावी नहीं होने दिया जाएगा। शहरी और देहाती इलाकों में चिकित्सा की उत्तम सुविधाएँ उपलब्ध रहेंगी। गाँव-गाँव दवाखाने होंगे। गाँव का डाक्टर किसी ग्रामवासी को बेमौत नहीं मरने देगा।

हमारे देश की संरक्षण-व्यवस्था लाजवाब होगी। हमारी सेनाएँ शत्रुओं की हमारी सीमाओं पर बुरी नजर डालने नहीं देगी। देश में कानून का सख्ती से पालन होगा। चोरों, डाकुओ, तस्करों और काला बाजार करनेवालों को अपनी काली कमाई के दरवाजे बंद कर देने पड़ेगे। भ्रष्टाचारियों और देशद्रोहियों को कड़ी सजाएँ देकर उन्हें उनके पापों का फल चखाया जाएगा।

मेरे सपनों के भारत में सभी देशवासी एकता के सूत्र में बँधे होंगे। उनमें प्रांतवाद, भाषावाद तथा धार्मिक संकीर्णता का विष न होगा। सब खुले दिल से राष्ट्र को सुखी, समृद्ध और शक्तिशाली बनाने में लगे होंगे समाज में ऊँच-नीच, जाति-पाँति आदि की दरारें न होंगी। दहेज जैसी कुप्रथाओं का कहीं स्थान न होगा।

इस प्रकार मेरे सपनों का भारत एक महान और आदर्श देश होगा। सारा विश्व उससे प्रेरणा लेगा। काश ! मैं अपने सपनों के भारत को अपनी आँखों से देख सकूँ !

रण का उत्सव

श्रीमती आरती निहलानी
सहायक अभियंता
अभियांत्रिकी विभाग

निकली थी घर से ये सोचकर,
कि बनाऊंगी अपना मकाम
बेघर हुई तो क्या
करूँगी अपने वजूद का निर्माण
कुर्बत से दूर कुदरत की ओर
चल पड़ा था मेरा मन,
एक जमीं का टुकडा मिला,
जहाँ करना था मुझे खिर्मन अपने ख्वाबों का,
थोड़ी दूर चली मैं, बिता के अपने अलौकिक क्षण,
नज़रों ने जो नज़ारा देखा, हो गयी मैं मगन,
एक ऐसी थी ज़मीन, जहाँ बिनहरीफ थी पवन,
और एक ऐसा था आसमां, जहाँ अनंत था गगन,
दिन कैसे बिता खुदा जाने, बस सिमटते गए मेरे नयन,
खुदा से यही दुआ मांगी, कि रुका दे मेरा ये भ्रमण,
अगली सुबह जब अलौकिक स्पर्श से खुले मेरे नयन,
राजा था वो इस धरती का, था उसका नाम रण,
मुझे हिचक थी उनसे कुछ पूछने में,
पर बड़े खुश थे वो,
मुज बंजारन को सिमटे हुए जो देखा,
अपनी कहानी सुनाने में मशगुल हुए वो,
अरब सागर से सुखी धरती का मिलन जैसे हो,
कैसे उनकी किस्मत ने बदलते मौसम की लाँघी रेखा,
एक वक्त पर धोलावीरा, तो लूणी का रंग भी देखा।
आज की इस दौर में यहाँ, न किसी की किलकारी और न जशन
फिर भी दुनिया को भर देता स्वाद का खाली पन।
कभी वक्त था डरते थे सभी सुनकर की अरे रे रे रे रण,
आज उसकी ही सुन्दरता को देखने के लिए,
बेवजह भी निकल पड़ता है हर इंसा का मन।
आई तो थी एक वजूद ढूंढने, मिटाने अपना खालीपन
उसीकी बातों से ही हुई है उम्मीद,
हुआ है खुद का ही खुद से ही अटूट बंधन,
अब लगता है की सूनेपन में भी,
हो सकता है ऐसे उत्सव का आयोजन ।।
खुश हूं ये आज देखकर, कुदरत की ये अनोखी शाम,
खुशनुमा सी मद्धम मद्धम, हो गई इस रण में मेरे नाम।।

आत्मनिर्भर भारत में भारतीय भाषाओं का महत्व

कु. हनी खिलवानी
सुपुत्री श्री महेश खिलवानी
कनि. अभियंता (विद्युत)
सी.एम.ई. विभाग।

आत्मनिर्भर भारत का महत्व मात्र बाजार एवं उत्पादों से ही नही है। इसके दो आधार भूतत्व है - एक तो आत्मविश्वास, दूसरा अपने समाज एवं जीवन संस्कृति से गहरा संवाद।

यह जानना रोचक है कि जिस आत्मनिर्भर भारत का स्वप्न हमने देखना प्रारंभ किया है, उसका मूल तत्व है अपने समाज, अपनी संस्कृति, अपने ज्ञान एवं अपनी दक्षता के मूल्य को समझकर उन पर आत्मविश्वास विकसित करना। जग ज़ाहिर है, प्रत्येक व्यक्ति अपनी पहचान बनाए रखना चाहता है, अपनी भाषा एवं संस्कृति का विकास चाहता है। उसकी लालसा होती है कि लोग उनके साथ उनके क्षेत्रीय भाषा में कार्य न करने पर हमारे ग्राहक प्रबंधन की नीतियां चर-मरा जाएगी । धंधादारी व ग्राहकों की भाषागत अभिव्यक्ति के अनुरुप प्रतिअभिव्यक्ति करनी होती है इससे उसके मन में यह धारणा बनेगी की हम सिर्फ उसके व्यापीरक लेन देन में सहायक ही नहीं अपितु उसकी भाषा एवं संस्कृति के भी अंग है। यह वही बिन्दु है जहां से मानवीय सहभागिता एवं मनोबलीकरण में वृद्धि होगी एवं ग्राहक हमारे संगठन से सीधे जुड़ जाएंगे, विभिन्न स्तर पर प्रभावी संबंध विकसित होंगे। ग्राहकाधार बढ़ते जाएंगे, व्यवसाय बढ़ेगे, हमारी लाभप्रदता बढ़ेगी और हम चिरंजीवी होंगे। यह बात ठीक ही कही गई है अगर हमें किसी के नब्ज़ पर हाथ रखनी हो तो हमें सर्वप्रथम उसकी भाषा में बात एवं कार्य करने होंगे। इस बात की चरितार्थता का अनुमान इस बात से लगा सकते हैं कि हमारे तत्कालीन प्रधानमंत्री ने वित्तीय लेन देन हेतु त्रिभाषी क्षेत्रीय भाषा, हिंदी, अंग्रेजी एंडाइड के प्रयोग पर बल दिए हैं एवं वित्तीय लेन-देन की सूचना इलेकट्रोनिक मीडिया से क्षेत्रीय भाषा में भेजने पर भी बल दे रहें है।

भारत जेसे विशाल देश के बहुभाषिकता के मद्वेनजर सभी भाषाओं के बीच एक एक सेतु बंध के रूप में कार्य करने के लिए एक संपर्क भाषा की जरुरत थी, जो भाषाई विविधता को समेटकर एक सूत्र में बांध सके। इस कसौटी पर राजभाषा हिंदी खरी उतर पाई। क्योंकि यह भाषा सहज, सरल है। क्षेत्रीय भाषाएं जरूरी है पर हिंदी देश के हर कोने के लोगों द्वारा बोली एवं समझी जाती है। इसके विशलता एवं व्यापकता का अंदाजा हम इस बात से लगा सकते हैं कि बोलने एवं समझने वाले की जनसंख्या के आधार पर संप्रति विश्व के नं. 1 भाषा है।

वर्तमान बाजार के दशाओं, ग्राहकों की इच्छा एवं व्यापारियों द्वारा प्रदत सेवा की गुणवत्ता से सीधा जुडा हुआ है। सभी जगहों पर भाषा का उपयोग किसी न किसी रूप में अवश्य ही विधमान है। ऐसी परिस्थिति में यह जरुरी है कि हम जिस भाषा में विचार-विनिमय करें एवं दस्तावेज बनाएं, उसे दोनों पक्ष अवश्य ही समझें। इस तरह हम कह सकते हैं कि भाषा ग्राहकों की बीच की महत्व की कड़ी है, जिसके इर्द गिर्द बाज़ार के सारे क्रिया-कलाप संचालित होते हैं। इसलिए यह कड़ी जितनी अधिक मजबूत होगी हम ग्राहक के उतने ही करीब होंगे। क्षेत्रीय भाषाओं के माध्यम से ही हम नई-नई योजनाओं, सेवाओं एवं सुविधाओं को जन-जन तक पहुंचा सकते हैं। उल्लेखनीय है कि सिर्फ सेवा उत्पाद बढ़ाना ही नहीं, इसे बेचना एक महत्वपूर्ण कला है, बेचने के लिए विक्रयकर्ता की भाषाओं में है। यही कारण है कि भारत सें विदेशी उत्पादकर्ता भी अपने उत्पाद का प्रचार उसी क्षेत्रीय भाषा या हिंदी में करते हैं एवं कर्मचारियों की नियुक्ति में हिंदी या क्षेत्रीय भाषा जानने वालों की वरीयता देते हैं।

संप्रति, भूमंडलीकरण एवं उदारीकरण के फलस्वरुप प्रतिस्पर्धा बढ़ी है। इसलिए भाषा संबंधी हमारी सोच प्रगतिवादी होनी चाहिए। इसे प्रगामी बनाने हेतु भारत सरकार भी कटिबद्ध है। इस प्रकार हम कह सकते है कि क्षेत्रीय भाषाओं का प्रचार-प्रसार एक राष्ट्रीय संकल्प हैं एवं इसका क्रियान्वयन एक राष्ट्रीय यज्ञ है देशा को आत्मनिर्भर बनाने हेतु।

यह आत्मविश्वास अपनी भाषा सें सतत जुड़ाव से मिलती रह सकती है। दूसरा, जो नागरिक, ज्ञानी, शोधज्ञ, उधमी अपनी आत्म भाषा से जुडा होगा। वही अपने समाज में प्रचलित लोक ज्ञान एवं लोक उधमों को जानेगा, बुझेगा और उनकी खूबियां दूसरों को समझा पाएगा। आत्मनिर्भर भारत का भौतिक पक्ष है - लोकदक्षता, देशज ज्ञान, स्थानीय उत्पादों को महत्व देने पर टिका हुआ है। इस पक्ष को भी मातृभाषाओं एवं आत्म भाषाओं से जुड़ा नागरिक ही मजबूत कर सकता है। ऐसा ही नागरिक उन्हें जानकर, उनकी प्रक्रियाओं को अंकित कर उन्हें भारत में बढ़त से जोड़ पाएगा।

भाषा हमारे सामाजिक जीवन की जींव है।
भाषा हमारी उन्नति और विकास का प्रतीक है।
भाषा हमारी शिक्षा और प्रगति की तस्वीर है।
भाषा हमारी वाणी का प्रतिरुप है।
भाषा से होती है ज्ञान की चाह।
भाषा ही बतानी है जीवन की राह।

हम सब जानते हैं भारत बहुभाषी देश है। भारतीय संस्कृति लगभग 5 हजार वर्ष पुरानी मानी जाती है। इतने दीर्घकाल में यहां कितने ही धर्म, पंथ, जातियां, उप संस्कृतियां विविध भाषिक समूह निर्माण हुए और एक-दूसरे से घुलमिल गए। भारत की यह समन्वित संस्कृति ही उसकी सबसे बड़ी विशेषता है। संस्कृति के लेनदेन में भाषा महत्वपूर्ण है जिसमें हम अपने विचारों को तथ भावों को दूसरे पर अभिव्यक्ति करते हैं।

राष्ट्रीय एकता के आवश्यक तत्व हैं - धर्म, भाषा, सांस्कृतिक चेतना एवं सदभावना। देश में भावात्मक एकता कायम रखने में भाषा की अग्रणी भूमिका है। अगर समाज को अधिक सशक्त, शक्तिशाली व सभ्य बनाना हो तो भाषा भी उसी अनुपात में सशक्त व सम्पन्न होगा।

स्पष्टतः न तो भाषा विहीन
समाज की परिकल्पना संभव है
और न ही समाज विहीन भाषा जीवत रह सकती है।

उल्लेखनीय यह है कि जिस प्रकार व्यक्ति के व्यक्तित्व को सीमाबद्ध नहीं किया जा सकता, उसी प्रकार भाषा का भी कोई स्थिर रूप नहीं माना जा सकता। व्यक्ति के व्यक्तित्व - विकास के साथ - उसमें देशकालानुसार परिवर्तन/परिवहन/विकसित होता रहता है।

खामोश जुबां रह जाती है,
हर बात आकर कह जाती है,
जिसकी अपनी बुनियाद नहीं,
दीवार वही ढह जाती है।

भाषा के महत्व को मनुष्य ने लाखों साल पहले पहचानकर उसका निरंतर विकास किया है। मनुष्य को सभ्य और पूर्ण बनाने के लिए शिक्षा का माध्यम भाषा ही है। जीवन के सभी क्षेत्रों में किताबी शिक्षा हो या व्यवहारिक शिक्षा, यह भाषा के द्वारा ही प्राप्त की जा सकती है।

समाज में रहकर व्यापार या लोगों से बातचीत के लिए मनुष्य के पास भाषा ही एकमात्र माध्यम है। आज कोई भी भाषा कम्प्यूटर तथा अन्य इलेकट्रोनिक उपकरणों से दूर रह कर जन मानस से जुडी नहीं रह सकती। वर्तमान में डाटाबेस के आधार पर मशीनी अनुवाद के जरिये पूरे विश्व में अनुवाद कार्य किया जा रहा है।

उदारीकरण, भूमंडलीकरण और ऊपर भोक्तावाद के इस युग में देश को आर्थिक रूप से शक्तिशाली बनाने तथा कौशल विकास को प्रोत्साहन देते हुए आम जनता को सूचना औद्योगिकी, कृषि अभियांत्रिकी और स्वास्थ्य सेवाओं जैसे क्षेत्रों में भाषाओं के माध्यम से शिक्षित करने की बहुत आवश्यकता है।

भाषा के माध्यम से स्वदेशी विज्ञान की समृद्ध परंपरा को जन-जन तक पहुंचाकर शिक्षित, शक्तिशाली व नए भारत का निर्माण हो सकता है।

प्रधानमंत्री मोदी ने पिछले दिनों कहा था कि कोरोना महामारी के इस संकट काल के दौरान इसी लोकल ने बचाया है। यह देश की ताकत है। जिसे हमें पहचानना होगा। इस संकट नें हमें बताया कि लोकल उत्पादन और स्थानीय आपूर्ति ऋखंला (लोकल सप्लाय चेन) कितनी जरुरी है। हमें स्थानीय उत्पाद लोकल प्रोडक्ट को बढ़ावा देना है। लोकल अर्थ व्यवस्था को बढ़ावा देना है और लोकल से ग्लोबल बनाना है। देश की आजादी के बाद भारत को आत्मनिर्भर बनाने के लिए खादी एवं भाषाओं के विकास को लेकर राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की सोच आज के आधुनिक युग में कही गुम सी हो गई थी। पर अब प्रधानमंत्री मोदी ने देश को आत्मनिर्भर बनाने के सपने के तहत स्वदेशी उत्पादनों को प्रोत्साहन देने की बड़ी पहल के रुप में देखा जा रहा है। स्थानीय उत्पादनों का बढ़ावा मिलने से ग्रामोद्योग से जुड़े लाखों लोग समर्थ बन सकेंगे और इन लाखों लोगों को जोड़ने का काम करती है उनकी अपनी भाषा, विविध प्रांतीय/प्रादेशिक भाषाएं।

अपना बोया आप ही खावें।
अपना कपड़ा आप बनावै।
माल विदेशी दूर भगावै।
अपना चरखा आप चलावै।

बाल मुकुन्द गुप्त ने अपनी उक्त पंक्तियों द्वारा राष्ट के स्वावलंबी होने के स्वर को ऊंचा किया था।

गांधीजी का सपना था कि गांवो का विकास हो, भारतीयता का विकास हो, भाषा एवं संस्कृति का विकास हो। वो कहते कि इस देश की 80 प्रतिशत जनता जो गांवो में रहती है उसके कल्याण एवं उन्नति के बारे में पहले सोचना चाहिए। आज भी हमारे देश की 70 प्रतिशत जनता गांवो में रहती है, शेष लगभग 30 प्रतिशत जनता जो शहरों व कस्बों में रहती है उसमें 50 प्रतिशत से ज्यादा लोग केवल हिंदी एवं भारतीय भाषाएं ही जानते हैं।

भारतीय उद्योगों के हर क्षेत्र में हमारी प्राथमिकता ग्रामीण जनता होनी चाहिए। ग्रामीण जनता के संपर्क में भाषा का अपना महत्व है। बैंक, बीमा जैसे उद्योंगों में भी जो सामाजिक प्रतिबद्धताएं हैं वे भाषा के माध्यम से ही संभव है। में यह कह सकती हूं कि व्यवसायिक उदेश्यों की प्राप्ति के लिए भाषा विकास जरुरी है। भाषा का लाभदर्शिता से प्रत्यक्ष रुप से नहीं अप्रत्यक्ष रुप से संबंध है। गांव एवं अर्ध शहरी क्षेत्रों में व्यवसाय के विकास के लिए, उत्पादन की जानकारी के लिए भाषाओं का प्रयोग किया जाता है जिससे व्यापार में वृद्धि होती है एवं व्यापार में वृद्धि से लाभ में वृद्धि होती है।

प्रोद्योगिकी के युग में भारत को एक बाजार यां व्यापार के रुप में देखा जा रहा है। युवा पीढ़ी मोबाइल, कम्प्यूटर का उपयोग चौबीसों घंटे करती है। नेट सेवा पर कुछ बेचा और खरीदा भी जाता है। भिन्न-भिन्न भाषाओं के वेबसाईटस बन चुके है। विदेशी कंपनीयां अपनी नीति बना रही है। जिसमें भारतीय भाषाओं को अपनाया जा रहा है।

आज भाषिक विश्लेक्षण का कार्य एक विज्ञान बन गया है। कोई भी कार्य तर्कसम्मत तथा क्रमबद्ध रीति से संगणक द्वारा सरलता पूर्वक सम्पन किया जा रहा है। वेब मीडिया ने भाषा की क्षमता में विस्फोट की स्थिति पैदा कर दी है। भारत व्यवसाय की दृष्टि से सबसे बड़ा देश है और भारत से जुड़ने के लिए हिंदी भाषा की जानकारी महत्वपूर्ण है। वेबमीडिया पर भाषा का उपयोग बड़ी मात्रा में होता दिखाई देता है। अर्थात भाषा का डिजीटलायजेशन यह विश्व को मुट्ठी में लाने का मार्ग हो रहा है।

भाषा पत्रकारिता की सूत्रधार है, राष्ट्रीयता की संवाहिका है। भाषा ने दुनियाभर के लोगों को ज्ञानात्मक, भावनात्मक तथा क्रियात्मक रुप में जोड़कर सक्रिय भूमिका निभाई है। ब्लोग पत्रकारिता महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रही है। हंस, सारिका, माधुरी, वसुधा, आलोचना, अभिव्यक्ति पत्रिकाएं ई पत्रिकाएं भी है।

दि. 26-06-2023 को केन्द्रीय विद्यालय, दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण, गोपालपुरी द्वारा शाला प्रवेशोत्सव-2023 मनाया गया। कार्यक्रम का उद्‌घाटन श्री एस. के. मेहता, आईएफएस, अध्यक्ष द्वारा प्रधानाचार्य, विभागाध्यक्षों और पोर्ट के अधिकारियों की उपस्थिति में दीप जलाकर किया गया।

श्री एस. के. मेहता, आईएफएस, अध्यक्ष, दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण और पोर्ट की प्रथम महिला श्रीमती अमिता मेहता ने शाला प्रवेशोत्सव-2023 के अवसर पर केन्द्रीय विद्यालय, दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण के छात्रों को 'बैक-टू-स्कूल' किट एवं अपना आशीर्वाद दिया।

Azadi Ka Amrit Mahotsav

G20 भारत 2023 INDIA

लहरों का राजहंस

25वाँ अंक
जनवरी - जून 2023

दि. 22 मई, 2023 को दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण, कंडला ने ऑयल जेट्टी 7 पर एम.टी. जीडब्ल्यू डोल्फिन द्वारा अब तक का सर्वाधिक 46000 मीट्रिक टन खाद्यतेल का प्रहस्तन कर एक नया कीर्तिमान बनाया।

दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण

(भारत का नं. 1 महापत्तन)